सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-2)

-लेखक-
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 413
ISBN 978-93-84003-01-2

सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-2)

–लेखक –
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष
(अमृत महोत्सव-2013-2014) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण 1100 प्रतियाँ
वीर नि. सं. 2540
फाल्गुन कृ. चतुर्दशी, 28 फरवरी 2014
भगवान वासुपूज्य जन्मजयंती
मूल्य 20/-रु.

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

मध्यमा कोर्स–व्याकरण विषय की पाठ्यक्रम पुस्तक

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

Scanned by CamScanner

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism.com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

Scanned by CamScanner

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

-जीवन प्रकाश जैन, समन्वयक

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वर्तमान बीसवी-इक्कीसवीं शताब्दी की सर्व प्राचीन दीक्षित एवं ज्ञान के क्षेत्र में जिन्हें जैनधर्म का जीवन्त इन्साइक्लोपीडिया कहा जा सकता है, ऐसी परमपूज्य, 60 वर्षीय दीक्षित-जीवन की महातपस्विनी साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के नाम सतीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय-मुरादाबाद एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में **"गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र"** का शुभारंभ वर्ष-2013 से किया गया है।

इस शिक्षा केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जैन श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के ज्ञान से अभिसिंचित करना एवं उन्हें समाज में लब्ध प्रतिष्ठित करने हेतु विशेष सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री के माध्यम से सम्मानित करना है। इस शिक्षा केन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कोर्स संचालित किये गये हैं, जिसे नियमावली के अनुसार सभी श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानाराधना के लिए ज्वाइन कर सकते हैं। पूज्य माताजी का यह मार्मिक चिंतन है कि जैनधर्म के बंधुओं को सांसारिक व लौकिक ज्ञान के साथ-ही जैनधर्म का ज्ञान अवश्यरूप से होना चाहिए, क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्तों को जानकर ही हमारी आत्मा विशुद्धि को प्राप्त करती है एवं धर्म के ये संस्कार आगामी अनेक भवों तक प्रत्येक आत्मा का मोक्षमार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें संसार भ्रमण से दूर करने में सहयोगी बनते हैं।

"ज्ञानामृतं भोजनं" अर्थात् ज्ञानरूपी अमृत ही आत्मा का भोजन है, यही इस शिक्षा केन्द्र का मूल उद्देश्य है। पाठकगण इन परीक्षा कोर्स में अभिरुचि के साथ भाग लेकर जैनधर्म के "सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, साहित्य व विधिविधान" से संदर्भित ज्ञान को प्राप्त करते हुए प्रवेशिका/मध्यमा/विशारद/शास्त्री/आचार्य के सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री आदि प्राप्त करके जैनधर्म की महती प्रभावना के साथ अपनी यशकीर्ति को भी दिग्दिगंतव्यापी बनायें, ऐसी प्रेरणा है।

-संपर्क कार्यालय-

C/o दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.-01233-280184, मो.-09411025124

E-mail : onlineccjs@gmail.com, Website : www.jambudweep.org

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

विषय	पाठ	विषय	पाठ
ईकारान्त स्त्रीलिंगशब्द	१	वस्त्र वर्ग	१७
अव्यय शब्द	१	अन्न वर्ग	१८
अनुवाद सहायक नियम	१	शाक वर्ग	१९
ईकारान्त ऊकारान्त शब्द	२	फल वर्ग	२०
ऋकारान्त शब्द	३	भोजननिर्माण सहायक वर्ग	२०
क्त्वाप्रत्ययान्त शब्द	४	भोज्य वर्ग	२०
ल्यबन्त शब्द	५	चिकित्सापरिकर	२०
यत् प्रत्ययान्त शब्द	६	रोग वर्ग	२१
तव्यप्रत्ययान्त शब्द	७	औषधि वर्ग	२१
ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द	८	शिक्षा वर्ग	२२
णवुल्प्रत्ययान्त शब्द	९	सभा वर्ग	२३
मकारान्त शब्द	९	न्याय वर्ग	२४
रसरूपादि वाचक शब्द	९	शस्त्र वर्ग	२५
पठ्धातु के रूप दशों गण	१०	वादित्र वर्ग	२५
गम् और दृश् धातु के रूप	१०	वाहन वर्ग	२५
स्वादिगणी धातुएं	११	भूषण वर्ग	२५
अदादिजुहोत्यादि तुदाधातुएं	१२	शरीर भूषा वर्ग	२५
लिख्, कृ, ज्ञा. की धातु	१३	शारीरिक धातु वर्ग	२५
आत्मनेपदी स्वादि धातुएं	१४	क्तवन्त, मतुबन्त शब्द	२५
मोद्, वृत्, क्षोद् धातु के रूप	१४	सन्नन्तोकारान्त शब्द	२५
आपूर्वक दा धातु के रूप	१५	नगर वर्ग	२६
मन्, विद्, जन् धातु के रूप	१५	स्थान विशेष वर्ग	२६
महिला वर्ग	१६	राजकीय मुद्रा वर्ग	२७
स्त्रीलिंग पशुपक्षि वर्ग	१६	धातु वर्ग	२७
शरीर वर्ग	१७	स्टेशन पोस्ट वर्ग	२७
गृह वर्ग	१८	मुद्रण वर्ग	२७

Scanned by CamScanner

प्रश्न पत्र

१. सखी, वधू, पितृ, गो, स्त्री, सुधी में से चार के रूप लिखो। १६

२. पठ् नी, अस्, या, गम्, कृ, ज्ञा, मोद्, क्षीद् में से किन्हीं चार धातुओं के लिट् और लृट् लकार में रूप लिखो। १६

३. अपने मित्र के लिए संस्कृतमें आधे पृष्ठ का एक पत्र लिखो। १०

४. महिषी, पाचिका, दर्शनं, तूलिका, पर्पटी, यवनिका, पुरस्कारः कोषः व्योमयानं, मुधा, कर्णलम्, शरावः, पत्रालयः इनमें से किन्हीं दश के हिन्दी अर्थ लिखो। १०

५. बोर्डिंग, मोती, कर्ज, यूनिवरसिटी, जीतकर, थर्मामीटर, लौकी, मही, माचिस, लंगोट, पंजा, रानी, पेटी इनमें से किन्हीं दश के संस्कृत पद लिखो। १०

६. इन श्लोकों का केवल भावार्थ लिखो— १०

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढ़ैः पाषाणखण्डेषु, रत्नसंज्ञा विधीयते ॥१॥
अन्यस्माद्यादृशं स्वस्मै, व्यवहर्तुं – मपेक्षसे।
अन्यस्मै तादृशं कर्तुं, मुत्सहस्व त्वमप्यहो ॥२॥

७. संस्कृत को हिन्दी करो—

अन्येषां लेखनं मूर्खाः एव पश्यन्ति। इदं पुस्तकं जबलपुरतः प्रकाशितम्। किम् यूयं प्रातः नो पठथ। कालिदासेन चतुर्दश्यां पौर्णमासी विहिता। गणेशस्य अम्बायाः ख्यातिरस्ति। नैजं नैपुण्यं सदा गुह्यम्। रक्षकाः अकारणं रक्षन्ति। १०

८. हिन्दी को संस्कृत बनाओ—

इस समय वहाँ बहिष्कार का प्रस्ताव होता है। कान्ता की कान्ति में कलंक नहीं है। दावात में स्याही नहीं थी। दीपावली की रातमें पूजा होती है। वैद्य यम और ईश्वर का भाई है। मजिस्ट्रेट का यह न्याय नहीं है। मेरा पड़ोस अच्छा नहीं है। १

Scanned by CamScanner

सुभाषित संग्रह

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यसि ॥१॥

धर्मार्थि—काम—मोक्षाणां, यस्यैकोऽपि न विद्यते ।
अजागल — स्तनस्यैव, तस्य जन्म निरर्थकम् ॥२॥

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितं ।
मूढ़ैः पाषाण — खण्डेषु, रत्नसंज्ञा विधीयते ॥३॥

वि प दः प रि हा रा य, शोकः किं कल्पते नृणाम् ।
पावके न हि पातः स्या, दातपक्लेश—शान्तये ॥४॥

षड् दोषाः पुरुषेणेह, हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः, आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥५॥

न ह्यकालकृता वाञ्छा, स-पुष्णाति समीहितम् ।
किं पुष्पावचयः शक्यः, फलकाले समागते ॥६॥

को ऽहं को मम धर्मः, किम्प्राप्यः किन्निमित्तिकः।
इत्यूहः प्रत्यहं नो चे, दस्थाने हि मतिर्भवेत्। ७॥

करिष्यामि करिष्यामि, करिष्यामीति चिन्तया ।
मरिष्यामि मरिष्यामि, मरिष्यामीति विस्मृतम्॥८॥

आयुषः क्षण एको ऽपि, न लभ्यः सुवर्णकोटिभिः ।
स चेन्निरर्थको नीतः, का नुहानिस्ततोऽधिका।१०।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

Scanned by CamScanner

श्री

स र ल सं स्कृ त शि क्षा

द्वितीय भाग

मंगलाचरण

भवबीजङ्कुरजनना, रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य ।
ब्रह्मा वा विष्णु र्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥

प्र थ मः पा ठः

ईकारान्त स्त्रीलिंग महीशब्द

प्रथमा	मही	मह्यौ	मह्यः
द्वितीया	महीम्	मह्यौ	महीः
तृतीया	मह्या	महीभ्याम्	महीभिः
चतुर्थी	मह्यै	महीभ्याम्	महीभ्यः
पञ्चमी	मह्याः	महीभ्याम्	महीभ्यः
षष्ठी	मह्याः	मह्योः	महीनाम्
सप्तमी	मह्याम्	मह्योः	महीषु
सम्बोधन	हे महि	हे मह्यौ	हे मह्यः

Scanned by CamScanner

ईकारान्त स्त्रीलिंग

श्रीशब्द

प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

ईकारान्त स्त्री–लिंग

स्त्रीशब्द

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः,स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

धी (बुद्धि) और ह्री (लज्जा) शब्द के रूप श्रीशब्द के समान होते हैं।

Scanned by CamScanner

ईकारान्त स्त्री-लिंगशब्द

अंगुली=अंगुली, अटवी=पहाड़ी, अपाची=दक्षिण दिशा, उदीची=उत्तरदिशा, एकादशी=ग्यारस, कटी=कमर, कठिनी=कलम या पेन, कदली=केला का वृक्ष, कामिनी=स्त्री, काली=कालीदेवी, काष्ठाम्बरी=अलमारी, कुमारी=कुवांरी, कुलाली=कुम्हारिन, गरीयसी=अत्यधिक, गोपाली गोपी=ग्वालिन, चतुर्दशी=चौदस, छागी=बकरी, जगती=पृथ्वी।

त्रयोदशी=तेरस, दासी=दासी, दीपावली=दिवाली, दूती=दूती, देवी=रानी या देवी, द्वादशी=बारस, नगरी=नगर, नदी=नदी, नर्तकी=नाचनेवाली, नवमी=नवमी, नारी=स्त्री, पार्वती=शिवपत्नी, पुरी=नगर, पृथिवी=जमीन, पौर्णमासी=पूर्णिमा, प्रतीची=पश्चिम दिशा, प्रतोली=गोपुर।

प्रदर्शिनी=नुमायश, प्राची=पूर्वदिशा, भागीरथी=गंगा, भारती=वाणी, महिषी=भैंस या पटरानी, रजनी=रात्रि, लेखनी=कलम या होण्डर, वाणी=वाणी, वापी=बावली, वाहिनी=सेना, शची=इन्द्राणी, शर्वरी=रात्रि, शूद्री=शूद्र की सजातीय स्त्री, श्रेणी=कक्षा, सेविका=नौकरानी।

नोट—इस वर्ग के शब्दों के रूप स्त्रीलिंग में महीशब्द के समान चलते हैं। अवी, तन्त्री, तरी, लक्ष्मी, धी, श्री और ह्री शब्दों की प्रथमाविभक्ति के एकवचन में सु का लोप नहीं होता, इससे इन शब्दों में प्रथमा के एकवचन में विसर्ग होता है। तदुक्तम्—

अवी तन्त्री तरी लक्ष्मी, धी-ह्री-श्रीणामुणादिषु।
सप्त-स्त्रीलिंगशब्दानां, न सुलोपः कदाचन॥

Scanned by CamScanner

अ व्य य व र्ग

एकधा=एक प्रकार, चतुर्धा=चार प्रकार, षोढा=छह प्रकार, नवधा=नौ प्रकार, दशधा=दस प्रकार, शतधा=सौ प्रकार, लक्षधा=लाख प्रकार, कोटिधा=करोड़ प्रकार, अत्रत्यम्=यहां का, कुत्रत्यम्=कहां का, तत्रत्यम्=वहांका, यत्रत्यम्=जहां का, द्विः=दो बार, त्रिः=तीन बार, शतशः=सौ बार, कोटिशः=करोड़ों बार।

अद्यप्रभृति=आज से लेकर, अन्तरेण=बिना, इतस्ततः=इधर उधर, इति=इस प्रकार, किञ्चित्=कुछ, क्वचित्=कहीं पर, झटिति=शीघ्र, तूष्णीम्=चुपचाप, धिक्=धिक्कार, पृथक्=अलग, बहिः=बाहर, भूयः=फिर, मुधा=व्यर्थ, मृषा=झूठ, युगपत्=एक साथ, वा=अथवा, शनैः=धीरे, सह शार्कं, सार्धम्=साथ, स्वयम्=खुद।

इन दोनों स्तम्भों के शब्द अव्यय हैं।

अनुवाद सहायक कतिपय नियम

१—किम, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनं वा सहार्थक शब्दों के योग में तृतीयाविभक्ति होती है। जैसे—तेन धनेन किम्। तृणेनापि कार्यं जायते। कोऽर्थः मूर्खेण। मूर्खेण किं प्रयोजनम्। मित्रेण सार्धम्।

२—बहिः, दिशावाची वा भिन्नार्थक शब्दों के योग में पंचमी-विभक्ति होती है। जैसे-ग्रामाद् बहिः। गृहाद् उत्तरे। तस्माद्भिन्नः।

३—बिना शब्द के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-धनं, धनेन, धनाद्वा बिना सुखम् न जायते।

४—समयवाचक शब्दों से तृतीया और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—सप्ताहेन, सप्ताहे इत्यादि।

५—समानार्थक शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—पुत्रेण समः, पुत्रस्य समः। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

शब्दों के लिंगों के बोध की विधि

इस पुस्तक में सर्वत्र शब्दों के लिंग जानने और उनके रूप चलाने के लिये इन स्थायी नियमों का ध्यान रखना चाहिए।

१—जिन शब्दों के अन्त में विसर्ग (:) हो उन्हें अधिकांश पुंलिंग समझना और उनके रूप बालशब्द के समान जानना।

२ - जिन शब्दों के अन्त में (म्) हो उन्हें नपुंसक लिंग समझना और उनके रूप ज्ञानशब्द के समान जानना।

३—जिन शब्दों के अन्त में आ की मात्रा (ा) हो उन्हें स्त्रीलिंग समझना और उनके रूप लताशब्द के समान जानना।

४ - जिन शब्दों के अन्त में ई की मात्रा (ी) हो उन्हें अधिकांश स्त्रीलिंग समझना और उनके रूप महीशब्द के समान जानना।

५—शेष इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त शब्दों के लिंग और उनके रूप अपने अध्यापक महोदय से जानना।

प्रार्थनापत्रम्

श्रीमत्सु राजकीयप्रधानपाठशालाप्रधानाध्यक्षेषु निवेदयते।

मान्यवर! श्रुतं किल मया यत् भवदीयपाठशालायाम् एकस्य व्याकरणाध्यापकस्यावश्यकता वर्तते इति। अहम् एतत्कार्यं सम्पादयितुं सर्वथा समर्थं इति तत्पदाय भवन्तं प्रार्थये।

मया खलु लब्धव्याकरणाचार्यपदवीकेन दशभिः वर्षैः कतिपयप्रख्यातपाठशालासु अध्यापयता सुमहान् अनुभवः प्राप्तः।

आशासे स्थानेऽस्मिन्नियुक्तिं कृत्वा मामनुग्रहीष्यन्ति देवपादाः।

विनीतः

मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ,

जवाहरगंज, जबलपुर म. प्र.

दिनांक ११-२-६०

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अस्यां तयां कति कुमार्यः तिष्ठन्ति । २. कमलायाः कुमार्या काष्ठाम्बरी अलङ्कृता । ३. चतुर्दश्याः रजन्यां षष्ठिः धनवः क्रीताः । ४. तस्यै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै पार्वत्यै च नमः । ५. देव्याः दुश्चरित्रस्य लेखे (लिखने में) लेखनी नो चलति । ६. न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति । ७. नार्याः त्रियां शिला पतिता । ८. परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।

९. पुरीं परितः रिपवः भ्रमन्ति । १०. पृथिव्याः कुक्षौ (कूँख में) के न गताः । ११. पौरुषे वसति लक्ष्मीः । १२. वाप्याः बहिः स्थितः । १३. भूषणैः किम् प्रयोजनम् । १४. युक्तिः शक्तेः गरीयसी । १५. सीता अपि रामेण सह वनं गता । १६. स्त्रियः चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवं न जानाति कुतः मनुष्याः । १७. स्त्रीणां बुद्धौ इदं नो आगच्छति (आता है) ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आज सुभद्रा ने एकादशी का व्रत किया । २. आपको सौ बार धिक्कार हो । ३. इस कुमारी के समान अन्य कुमारी नहीं है । ४. इस नगरी में कितनी जातियाँ हैं । ५. उत्तर की सेना में पच्चीस सिपाही (आरक्षकाः) मरे । ६. इन्होंने इधर-उधर (इतस्ततः) तलाश (जिज्ञासा) की । ७. उसके बिना मैं नहीं जाऊंगा । ८. उस धन से क्या प्रयोजन है (जायते) । ९. एक सप्ताह में सम्यक्त्व के योग्य हो जाते हैं ।

१०. दीपावली की रात में लक्ष्मी की पूजन होती है । ११. धर्म दश प्रकार के (दशधा) होते हैं । १२. नारी के बिना घर नहीं शोभता (भाति) । १३. भाई की कुमारी ने अलमारी सजाई । मित्र की स्त्री ने नौका से (तर्या) सागर पार किया । १४. यह पुस्तक किसी स्त्री ने लिखी । १५. सुधा की कक्षा में (श्रेण्याम्) सोलह कुमारियां हैं । १६. सुरेश स्त्री से (स्त्रियै) नाराज होता है । १७. स्त्रियां नदी से (नदीतः, नद्याः) मन्दिर को जाती हैं । १८. स्त्री में कौन मोहित नहीं होता ।

Scanned by CamScanner

द्वितीयः पाठः

ईकारान्त पुंल्लिग सुधीशब्द

प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

ग्रामणी=गांव को ले जाने वाला, नी=ले जाने वाला, सुधी=अच्छी बुद्धि वाला। ग्रामणी और नी शब्द के रूप सुधीशब्द के समान होते हैं। केवल सप्तमी के एकवचन में ग्रामण्याम् और निधाम् होता है।

ईकारान्त पुंल्लिग प्रधीशब्द

प्रथमा	प्रधीः	प्रध्यौ	प्रध्यः
द्वितीया	प्रध्यम्	प्रध्यौ	प्रध्यः
तृतीया	प्रध्या	प्रधीभ्याम्	प्रधीभिः
चतुर्थी	प्रध्ये	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
पञ्चमी	प्रध्यः	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
षष्ठी	प्रध्यः	प्रध्योः	प्रधीनाम्
सप्तमी	प्रधि	प्रध्योः	प्रधीषु
सम्बोधन	हे प्रधीः	हे प्रध्यौ	हे प्रध्यः

Scanned by CamScanner

ऊकारान्त पुल्लिग स्वभूशब्द

प्रथमा	स्वभूः	स्वभुवौ	स्वभुवः
द्वितीया	स्वभुवम्	स्वभुवौ	स्वभुवः
तृतीया	स्वभुवा	स्वभूभ्याम्	स्वभूभिः
चतुर्थी	स्वभुवे	स्वभूभ्याम्	स्वभूभ्यः
पञ्चमी	स्वभुवः	स्वभूभ्याम्	स्वभूभ्यः
षष्ठी	स्वभुवः	स्वभुवोः	स्वभुवाम्
सप्तमी	स्वभुवि	स्वभुवोः	स्वभूषु
सम्बोधन	हे स्वभूः	हे स्वभुवौ	हे स्वभुवः

ऊकारान्त स्त्रीलिंग खलपूशब्द

प्रथमा	खलपूः	खलप्वौ	खलप्वः
द्वितीया	खलप्वम्	खलप्वौ	खलप्वः
तृतीया	खलप्वा	खलपूभ्याम्	खलपूभिः
चतुर्थी	खलप्वे	खलपूभ्याम्	खलपूभ्यः
पञ्चमी	खलप्वः	खलपूभ्याम्	खलपूभ्यः
षष्ठी	खलप्वः	खलप्वोः	खलप्वाम्
सप्तमी	खलप्वि	खलप्वोः	खलपूषु
सम्बोधन	हे खलपूः	हे खलप्वौ	हे खलप्वः

ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधूशब्द

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः

Scanned by CamScanner

षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

खर्जूः=खाज, चञ्चूः=चोंच, चमूः=सेना, जम्बूः=जामुन, तनूः=शरीर, दद्रूः=दाद, प्रसूः=माता, भूः=पृथ्वी, श्वश्रूः=सास इन स्त्रीलिंग शब्दों के रूप वधूशब्द के समान होते हैं। भ्रूः=भौंह शब्द के रूप स्वभूशब्द के समान होते हैं।

ओकारान्त पुल्लिग गोशब्द

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

(पृष्ठ ४ का शेष)

अन्यस्माद्यादृशं स्वस्मै, व्यवहर्तुमपेक्षसे।
अन्यस्मै तादृशं कर्तुं, मुत्सहस्व त्वमप्यहो ॥११॥
अवशेन्द्रिय-चित्तानां, हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो, ज्ञानं भारः क्रियां बिना ॥१२॥

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अत्र चमूनां सप्ततिः आगच्छति। २. किम् तया चम्ब्या लाभः। ३. ग्रामण्यां प्रजायाः विश्वासः नास्ति। ४. तन्वां स्नेहः नो माति स्म (समाता था)। ५. प्रध्या पापं त्यक्तम्। ६. प्रध्यि गुरोः स्नेहः तिष्ठति। ७. वध्वाः द्वितीयः पुत्रः जातः। ८. भुवा तन्वा वा मे प्रयोननं नास्ति। ९. भुवः बहिः गन्तुं कः अपि नार्हति।

१०. भुवि सर्वे न साधवः। ११. मम तिस्रः श्वस्वः सन्ति। १२. श्वसूः वध्वै कुप्यति। १३. साम्प्रतं भुवि प्रतारकाः बहवः जाताः। १४. सुधिया सह संगतेः मृत्युः अपि वरम्। १५. सुधियां मार्गेण गच्छामः। १६. स्वयम्भुवा इदं नो कथितम् स्वयम्भुवे नमः।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. इस घर में चार बहुएं हैं। २. इस समय (साम्प्रतम्) भू पर (भुवि। साधु बहुत (बहवः। नहीं हैं (नो सन्ति)। ३. गायें (गाः) खरीदने को (क्रेतुम्) यहां आया। ४. गायें (गावः) परोपकार के लिये दुहती हैं (दुहन्ति)। ५. ग्वाल गायों को (गाः) पालते हैं (पान्ति)। ६. चोंच से खोदता है। ७. पृथिवी के बाहर भी आकाश है। ८. वह पृथिवी का (भुवः) राजा हुआ। ९. बहू के साथ (वध्वा सह) वन को गया।

१०. बहू ने शरीर से (तन्वा) लक्ष्मी जीती। ११. मुझे बहू से प्रयोजन नहीं। १२. मेरी गायें उसकी भू पर (भुवि) चरती हैं (चरन्ति)। १३. सास के साथ गया। १४. सेना के चारों ओर शत्रु घूमते हैं। १५. सेना ने (चम्वा) नदी पार की (तीर्णा)। १६. सब शिशु सुबोध (सुधियः) नहीं (नो) भवन्ति। १७. स्वभू को नमस्कार हो।

Scanned by CamScanner

तृतीय पाठ

ऋकारान्त पुल्लिंग धातृशब्द

प्रथमा	धाता	धातारौ	धातारः
द्वितीया	धातारम्	धातारौ	धातॄन्
तृतीया	धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
चतुर्थी	धात्रे	धातृभ्याम	धातृभ्यः
पञ्चमी	धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
षष्ठी	धातुः	धात्रोः	धातॄणाम्
सप्तमी	धातरि	धात्रोः	धातृषु
सम्बोधन	हे धातः	हे धातारौ	हे धातारः

ऋकारान्त पुल्लिंग पितृशब्द

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

ऋकारान्त नपुंसकलिंग कर्तृशब्द

प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
सम्बोधन	हे कर्तः, कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि

नोट—कर्तृशब्द के शेषरूप वारिशब्द के समान होते हैं।

Scanned by CamScanner

ऋकारान्त शब्द

अध्येतृ=पढ़ने वाला, उपकर्तृ=उपकारी, कर्तृ=करने वाला, क्रेतृ=खरीददार, गन्तृ=जाने वाला, जेतृ=जीतने वाला, ज्ञातृ=जानकार, द्रष्टृ=देखने वाला, नप्तृ=नाती, नेतृ=नेता या मुखिया, पातृ=रक्षा करने वाला, भर्तृ=स्वामी या पालक, भेतृ=भेदक, रक्षितृ=रक्षा करने वाला, वक्तृ=कहने वाला, वप्तृ=पिता या बोने वाला, विक्रेतृ=विक्रेता, विधातृ=विधाता, श्रोतृ=सुननेवाला, सवितृ=पिता या सूर्य, स्रष्टृ=ब्रह्मा या रचयिता, होतृ=हवनकरनेवाला।

इन शब्दों के रूप धातृशब्द के समान होते हैं। परन्तु जब ये स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग शब्दों के विशेषण होते हैं तब इनके रूप मातृशब्द और कर्तृशब्द के समान होते हैं।

जामातृ=दामाद, नृ=मनुष्य, पितृ=पिता, भ्रातृ=भाई।

इन ऋकारान्त पु० शब्दों के रूप पितृशब्द के समान होते हैं।

दुहितृ=पुत्री, ननान्दृ=ननद, पितृस्वसृ=फुआ, मातृ=माता, मातृस्वसृ=मौसी, स्वसृ=बहिन।

इन ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में दुहितृ और मातृशब्द के रूप पितृशब्द के समान और शेष शब्दों के रूप धातृशब्द के समान होते हैं। द्वितीया के ब० व० में पितृस्वसृः और मातृः रूप होते हैं।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अप्रियस्य च सत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः। २. अस्मिन् नरि मे विश्वासः नास्ति। ३. उपकर्त्तुः उपकारं स्मरामि। दुहितरम् एवं भारतीं किं वदसि। ४. दर्दुराः यत्र वक्तारः तत्र मौनं वरं मतम्। ५. पितरि आगते अहं गतः।

Scanned by CamScanner

७. पित्रोः कः महान् । ८. भारते बहवः नेतारःविद्यन्ते। ९. भ्राता मातुः स्मरति । १०. मातरं स्मरसि किम् । ११. मात्रे पित्रे वा नमः । १२. महावीरस्य पितरौ नमामः । १३. विधात्रा सृष्टिः निर्मिता न वा । १४. श्रोत्रा साधवः पृष्टाः । १५. सवित्रा दीप्यति दिनम् ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. गुरु पिता से (पितुः) भिन्न (अन्य) नहीं है । २. जैसे श्रोता होते हैं वैसा वक्ता होता है । ३. तू स्वामी के (भर्त्तुः) प्रीति का पात्र (पात्रम्) हुआ । ४. पिता की आज्ञा से (निर्देशात्) उसने भार्या विवाही (ऊढा) । ५. पुत्र माता का प्राण होता है । ६. ब्रह्मा ने (स्रष्ट्रा) सृष्टि रची या नहीं ?

७. भाई का भाई में (भ्रातरि) बड़ा स्नेह था । ८. भारत में बहुत (बहवः) नेता (नेतारः) हैं । ९. माता और पिता में (पित्रोः) कौन बड़ा (अहीनः, वरः) है । १०. मेरा वक्ता में (वक्तरि) विश्वास है । ११. लड़के मां बाप को (पितरौ) नमस्कार करते हैं । १२. सम्प्रति तथ्य के ज्ञाता नहीं हैं । १३. साधु उपकारी के (उपकर्तुः) उपकार को नहीं भूलते (विस्मरन्ति) । १४. सास की दामाद में (जामातरि) अधिक प्रीति होती है । १५. हम दोनों भाई (भ्रातरौ) हैं ।

Scanned by CamScanner

चतुर्थः पाठः

क्त्वाप्रत्ययान्त कृदन्तशब्द

असित्वा च उषित्वा वा, उक्त्वा ऊढ्वा तथैव च ।
कर्तयित्वा च कृत्वा वा, कारयित्वा पुनः पुनः ॥१॥
क्रीत्वा क्षिप्त्वा च खादित्वा, गत्वा गमयित्वा तथा ।
घ्रात्वा तथा गृहीत्वा वै, चरित्वा चर्वित्वा तथा ॥२॥
छित्त्वा जित्वा तथा ज्ञात्वा, तीर्त्वा त्यक्त्वा तथैव च ।
दापयित्वा दत्त्वा त्रात्वा, दृष्ट्वा धृत्वा ततः परम् ॥३॥
नीत्वा नत्वा नमित्वा च, पाचयित्वा ततः पुनः ।
पठित्वा पाठयित्वा च, पक्त्वा पीत्वा ततः परम् ॥४॥
पूत्वा पृष्ट्वा च बुद्ध्वा वै, व्रजित्वा शोभने पथि ।
भित्त्वा भुक्त्वा च भूत्वा हि, भोजयित्वा मुहुर्मुहुः ॥५॥
भृत्वा मत्वा मिलित्वा च, मेलयित्वा तथैव च ।
मुक्त्वा मुषित्वा मृत्वा च, वर्जयित्वा ततः परम् ॥६॥
विदित्वा वेदयित्वा च, रुदित्वा च लब्ध्वा ततः ।
लिखित्वा लीढ्वा लूत्वा च, लेखयित्वा ततः पुनः ॥७॥
शयित्वा श्रित्वा श्रुत्वा च, सुप्त्वा सेवित्वा तथा ।
स्पष्ट्वास्नात्वातथास्थित्वा, स्मृत्वा हृत्वा ततः परम् ॥८॥
हसित्वा हित्वा हृत्वा च, एते सर्वे महामते ? ।
क्त्वान्ताः कथिताः शब्दाः, कर्मसम्बन्धिनो ऽव्ययाः ॥९॥

Scanned by CamScanner

क्त्वाप्रत्ययान्त कृदन्तशब्द

अासित्वा=बैठकर, उक्त्वा=कहकर, उषित्वा=रहकर, ऊढ्वा=वहनकर,कर्तयित्वा=कतरकर,कारयित्वा=कराकर कृत्वा=करके,क्रीत्वा=खरीदकर,क्षित्वा=फेंककर, खादित्वा =खाकर, गत्वा=जाकर, गमयित्वा=भेजकर, गृहीत्वा= लेकर,घ्रात्वा=सूंघकर,चरित्वा=करके, चर्वित्वा=चबाकर, छित्त्वा=छेदकर, जित्वा=जीतकर, ज्ञात्वा=जानकर।

तीर्त्वा=पारकर, त्यक्त्वा=छोड़कर, त्रात्वा=बचाकर, दत्त्वा=देकर, दापयित्वा=दिलाकर, दृष्ट्वा=देखकर, धृत्वा =धारणकर, नत्वा=नमस्कार कर, नयित्वा=लिवा जाकर, नीत्वा=लेकर, पक्त्वा=पकाकर, पाचयित्वा= पकवाकर, पठित्वा=पढ़कर, पाठयित्वा=पढ़ाकर, पीत्वा= पीकरपूत्वा=पवित्राकर,पृष्ट्वा=पूंछकर,बुद्ध्वा=जानकर।

ब्रजित्वा=चलकर, भित्त्वा=भेदकर, भुक्त्वा=खाकर, भूत्वा=होकर, भृत्वा=पालकर, भोजयित्वा=खिलाकर, मत्वा=मानकर, मिलित्वा=मिलकर, मुक्त्वा=छोड़कर, मुषित्वा=चुराकर, मृत्वा=मरकर, वर्जयित्वा=छोड़कर, विदित्वा=जानकर, वेदयित्वा=जनाकर, रुदित्वा=रोकर, लब्ध्वा=पाकर, लिखित्वा=लिखकर, लूत्वा=काटकर।

लेखयित्वा=लिखाकर, शयित्वा=सोकर, श्रित्वा= सहारा लेकर, श्रुत्वा=सुनकर, सुप्त्वा=सोकर, सेवित्वा= सेवा कर, स्तुत्वा=स्तुति कर, स्नात्वा=नहाकर, स्पृष्ट्वा =छूकर, स्मृत्वा=याद कर, हत्वा=मारकर, हसित्वा= हँसकर, हित्वा=छोड़कर, हृत्वा=चुराकर।

Scanned by CamScanner

ये सभी शब्द अव्यय हैं। इनके रूप नहीं चलते। इनका कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है। यथा महीपतिः इति भारतीम् उक्त्वा विरराम। इत्यादि। अकर्मक धातुओं में कर्म नहीं होता।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. आर्याः विपर्ययं कृत्वा, सर्वे खेदम् आश्रिताः (प्राप्त हुए)। २. इदं कार्यं वर्जयित्वा, अन्यत्सर्वं करोमि। ३. एवम् उक्त्वा गृहं गतः। ४. कृत्वा कल्याणमन्येषां, हितं स्वस्य करोति सः। ५. छात्राः सर्वे गुरुं दृष्ट्वा, सत्वरं प्रपलायिताः। ६. जैनाः स्नात्वा जिनम् अर्चयन्ति। ७. तत्र गत्वा मृता देवी।

८. देवं मत्वा गृहं गतः। ९. भूत्वा धैर्यं करोति सः। १०. तत्र स्थित्वा किम् न स्मरसि। ११. नारी पतिं हित्वा पलायिता। १२. नीत्वा गन्तुं सः वाञ्छति। १३. भुक्त्वा गच्छति सः गृहम्। १४. मूल्यं दत्त्वा पुस्तकं क्रीणामि।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप सब भोजन कर शीघ्र आये। २, उसे देखकर वे विशेष विस्मय को प्राप्त हुए। ३. ऐसा वचन सुनकर कुमार ने कहा। ४. जिनदेव को देखकर मानव (जनाः) प्रसन्न होते हैं। ५. जिनेश सदा रोकर ही सोता है। ६. पढ़कर निपुण हुआ। ७. यह देखकर मैंने कहा। ८. मनुष्य कार्य कर गया।

९. वह कार्य करा कर प्रसन्न होता है। १०. वह चित्र खरीद कर आया। ११. वह जिनदेव को नमस्कार कर स्तोत्र पढ़ता है। १२. वह मरकर स्वर्ग गया। १३. वहाँ ठहरकर क्यों नहीं पढ़ते। १४. व्रत ग्रहण कर स्वर्ग गया।

पं च मः पा ठ

ल्यबन्तशब्दाः

अधीत्य = पढ़कर, अन्विष्य = खोजकर, आकृष्य = खींचकर, आगत्य = आकर, आदाय = लेकर, आनीय = लाकर, आपृच्छय = पूछकर, आरभ्य = शुरूकर, आरुह्य = चढ़कर, आलोक्य = देखकर, आसाद्य = प्राप्त कर, आहूय बुलाकर, उत्थाय = उठकर, उपेत्य = प्राप्त होकर, उल्लिख्य = कहकर।

उत्सृज्य = छोड़कर, निधाय = रखकर, निपीय = पीकर, नियुज्य = नियुक्त कर, निवृत्य = लौटकर, निवेद्य = निवेदनकर, निश्चित्य = निश्चय कर, निषिध्य = मनाकर, निःसृत्य = निकल कर, पराजित्य परिभूय = तिरस्कार कर, प्रणम्य = नमस्कार कर, प्रविश्य = घुसकर, प्राप्य = पाकर।

विक्रीय = बेचकर, विचार्य = विचारकर, विचिन्त्य = विचारकर, विजित्य = जीतकर, विज्ञाय = जानकर, विधाय = करके, विलिख्य = लिखकर, विश्वास्य = विश्वास कर, विहस्य = हँसकर, विहाय = छोड़कर, वीक्ष्य = देखकर, समानीय = लाकर, सम्वेष्ट्य = लपेटकर।

ये सभी शब्द अव्यय हैं। इनके भी रूप नहीं चलते।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१- अद्य आरभ्य इदं नो करोमि। २- अधीत्य शास्त्राणि भवन्ति मूर्खाः। ३- अरीन् पराजित्य नृपः निवृत्तः। ४- इति विचार्य सः नरः प्रस्थितः। ५- ऋषीन् आहूय नमामि तान्। ६- एनम् आदाय गच्छति। ७- गुणाः निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति। ८- गोष्ठं गाम् आनीय गुरुम् अर्चति।

९- जीवने जातां घटनाम् उल्लिख्य अलम्। १०- ततः तम् आपृच्छ्य गृहं गतः। ११- भर्त्तारम् उत्सृज्य गता हि मुग्धा। १२- वानरः तरुम् आरुह्य फलानि खादति। १३- विषमां हि दशां प्राप्य दैवं निन्दन्ति मानवाः। १४- स्वातन्त्र्यम् आसाद्य कः न नन्दति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१- इस विचार को छोड़कर (विहाय) वन को गया। २- ईश्वर को याद करता है। ३- उसे देखकर (आलोक्य) मैं शीघ्र (सत्वरम्) आया। ४- ऐसा विचार कर (विचार्य) वह मनुष्य रवाना हुआ। ५- गुरु से (गुरवे) निवेदन कर (निवेद्य) करता हूं। ६- पुत्रों को बुलाकर (आहूय) कहा। ७- वह गोद में (अङ्कम्) आरूढ़ होकर (आरुह्य) सोया।

८- वह निकल कर (निःसृत्य) मुझको देखता था। ९- वह पुस्तक लेकर (आदाय) घर गया। १०- वह सबेरे उठकर (उत्थाय) ईश्वर को याद करता है। ११- वहाँ से आकर यहाँ रहता हूँ। १२- शत्रुओं को जीतकर (विजित्य) मूर्छा को प्राप्त हुआ। १३- सुरा पीकर (निपीय) ईश्वर को कौन जानता है।

———

षष्ठः पाठः

यत्प्रत्ययान्त कृदन्त शब्दवर्ग

आख्येयं देयमादेयम्, उत्थेयं वा कार्यं तथा ।
क्रेयं गम्यं तथा गुह्यं, गेयं जेयं तथा त्वया ॥१॥
ज्ञेयं देयं तथा ध्येयं, नेयं पेयं त्वया मया ।
मेयं तथा च विक्रेयं, विधेयं वा लेख्यं तथा ॥२॥
लेयं श्रव्यं तथा स्थेयं, हेय ग्राह्यं यथायथम् ।
भवता त्वया मया चैव, तथा सर्वैश्च कर्तृभिः ॥३॥

अनुष्ठेयम् = करना चाहिये, आख्येयम् = कहना चाहिये, आदेयम् = लेना चाहिये, उत्थेयम् = उठना चाहिये, कार्यम् = करना चाहिये, क्रेयम् = खरीदना चाहिये; गम्यम् = जाना चाहिये, गुह्यम् = छिपाना चाहिये, गेयम् = गाना चाहिये, गोप्यम् = छिपाना चाहिये, ग्राह्यम् = ग्रहण करना चाहिये, जेयम् = जीतना चाहिये, ज्ञेयम् = जानना चाहिये, देयम् = देना चाहिये ।

ध्येयम् = विचारना चाहिये, नेयम् = ले जाना चाहिये, पेयम् = पीना चाहिये, मेयम् = नापना चाहिये, विक्रेयम् = बेचना चाहिये, विधेयम् = करना चाहिये, लेख्यम् = लिखना चाहिये, लेयम् = लेना चाहिये, शक्यम् = समर्थ होना चाहिये, श्रव्यम् = सुनना चाहिये, स्थेयम् = ठहरना चाहिये, हेयम् = छोड़ना चाहिये ।

नोट—ये सभी शब्द प्रायः त्रिलिंग हैं । इनके रूप बालः, ज्ञान और लता शब्द के समान होते हैं । इनका कर्ता तृतीयान्त होता है । जैसे-त्वया, मया, भवता वा आख्येयः, आख्येयम्, आख्येया इत्यादि ।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अदत्तं परकीयं वस्तु नो आदेयम् । २. अनार्यस्य संगतिः त्याज्या । ३. अलाभं (हानि) लाभं वा विचार्य एव कार्यं विधेयम् । ४. अस्माभिः चपलैः नो भाव्यम् । ५. ऋषिणा सह विवादः नो विधेयः । ६. एकस्य प्राणान् हृत्वा बहूनां विघातः नो विधेयः ।

७. कर्तव्यम् अद्य एव विधेयम् । ८. कलिः केनचित् सह नो कार्यः । ९. कोपः कदापि नो विधेयः । १० गौरवं लिप्सुभिः साहसम् अनुष्ठेयम् । ११. मैत्रं नैपुण्यं सदा गुह्यम् । १२. पिशुनानाम् अन्तिके न स्थेयम् । १४. प्रातः विचार्य एव कार्यम् ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. चौर्य सदा छोड़ने योग्य है । २. घर का विवाद प्रयत्न से रोध्य है । ३. दाता का सत्कार करना चाहिये । ४. दैव अन्यथा करने को समर्थ नहीं (शक्यम्) । ५. पाप सदा छोड़ देना चाहिये । ६. प्रमाद कभी भी नहीं करना चाहिये ।

७. प्रयत्न आज ही करना चाहिये । ८. भूपति के साथ विरोध नहीं करना चाहिये । ९. मा बाप की (पित्रोः) आज्ञा सदा मानना चाहिये (अनुष्ठेया) । १०. शराब कभी नहीं पीना चाहिये । ११. शय्या से प्रभात में ही उठना चाहिये । १२. सत्संगति सदा करना चाहिये । १३. साधुओं को दान देना चाहिये ।

Scanned by CamScanner

सप्तमः पाठः

तव्यप्रत्ययान्ताः कृदन्ता शब्दाः

आगन्तव्यम् = आना चाहिये, उत्थातव्यम् = उठना चाहिये, उषितव्यम् = बसना या रहना चाहिये, कर्त्तव्यम् = करना चाहिये, कारयितव्यम् = कराना चाहिये, क्रेतव्यम् = खरीदना चाहिये, गन्तव्यम् = जाना चाहिये, जेतव्यम् = जीतना चाहिये, ज्ञातव्यम् = जानना चाहिये, त्यक्तव्यम् = छोड़ना चाहिये, दातव्यम् = देना चाहिये।

दापयितव्यम् = दिलावाना चाहिये, दृष्टव्यम् = देखना चाहिये, धर्तव्यम् = रखना चाहिये, नेतव्यम् = ले जाना चाहिये, पठितव्यम् = पढ़ना चाहिये, पाठयितव्यम् = पढ़ाना चाहिये, पातव्यम् = पीना चाहिये, पृष्ठव्यम् = पूछना चाहिये, भवितव्यम् = होना चाहिये, भोक्तव्यम् = खाना चाहिये, वक्तव्यम् = कहना चाहिये।

विधातव्यम् = करना चाहिये, विस्मर्तव्यम् = भूलना चाहिये, वोढव्यम् = ढोना चाहिये, रक्षितव्यम् = रक्षा करना चाहिये, लब्धव्यम् = प्राप्त करना चाहिये, श्रोतव्यम् = सुनना चाहिये, सेवितव्यम् = सेवा करना चाहिये, स्थातव्यम् = ठहरना चाहिये, स्मर्तव्यम् = याद करना चाहिये, हन्तव्यम् = मारना चाहिये, हसितव्यम् = हँसना चाहिये।

नोट-- इस वर्ग के शब्द प्रायः त्रिलिंग हैं। इनके रूप बाल, ज्ञान और लता शब्द के समान चलते हैं। जैसे—न्यायः कर्त्तव्यः। नीतिः कर्त्तव्या। कार्यं कर्त्तव्यम् इत्यादि। किन्तु कुछ शब्दों के रूप केवल नपुंसकलिंग में ही चलते हैं। इनका कर्त्ता तृतीयान्त होता है। जैसे— मया, त्वया, भवता वा कर्त्तव्यः, कर्त्तव्यं, कर्त्तव्या इत्यादि।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अस्यां स्थितौ नैजं कर्तव्यम् नो त्यक्तव्यम्। २. ईदृश्यां स्थितौ किम् कर्तव्यं विधेयम्। ३. उन्नतेः कर्तव्यं विधेयम्। ४. कर्तव्यं केचित् नो कुर्वन्ति। ५. कार्यं विचार्यं एव विधातव्यम्। ६. गुरोः निन्दा न कर्तव्या। ७. गृहं विहाय अन्यत्र नो गन्तव्यम्। ८. जीवाः कदापि नो हन्तव्याः।

९. निशायां परकीये गृहे नो गन्तव्यम्। १०. पठितः पाठः प्रातः स्मर्तव्यः। ११. पित्रोः आज्ञा न विस्मर्तव्या। १२. भिक्षुभ्यः दानं दातव्यम्। १३. युस्माभिः एव वक्तव्यम्। १४. रात्रौ अन्यस्य गृहे न स्थातव्यम्। १५. शत्रवः प्रयत्नेन जेतव्याः। १६. शय्यातः प्रातः एव उत्थातव्यम्। १७. स्वस्य भारः स्वयं वोढव्यः।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. ऋषियों के उपदेश पर चलना चाहिये। २. कर्तव्य आज (अद्य) ही करना चाहिये विधेयम्)। ३. कुमार्ग में किसी को नहीं जाना चाहिये। ४. गुरु का वचन सदा स्मरण करना चाहिये। ५. जगदीश को पूजकर पुण्य प्राप्त करना चाहिये (लब्धव्यम्)। ६. पठित पाठ प्रतिदिन पढ़ना चाहिये। ७. पिता की आज्ञा बिना कार्य नहीं करना चाहिये।

८. प्रशस्त कार्य करना चाहिये। ९. मधुर वाक्य बोलना चाहिये। १०. माता पिता की (पित्रोः) भक्ति करना चाहिये। ११. निर्जन वन में नहीं बसना चाहिये (उषितव्यम्)। १२. यहाँ विचार करना चाहिये। १३. सबको (भवद्भिः) यहाँ नहीं ठहरना चाहिये।

Scanned by CamScanner

अष्टमः पाठः

ल्युट्प्रत्ययान्त कृदन्तशब्द वर्ग

अनुकरणम्=नकल करना, अन्वेषणम्=तलाशना, अवलोकनम्=देखना, अशनम्=खाना, आगमनम्=आना, आदानम्=लेना, उत्थानम्=उठना, उद्घाटनम्=खोलना, उपवेशनम्=बैठना, कथनम्=कहना, करणम्=करना, क्रयणम्=खरीदना, क्षेपणम्=फेंकना, खननम्=खोदना, गमनम्=जाना, गानम=गाना।

चयनम्=चुनना, चर्वणम्=चबाना, जागरणम्=जागना, ज्ञानम्=जानना, तर्जनम=डाटना, तोलनम्=तोलना, दर्शनम्=देखना, दानम्=देना, धावनम्=दौड़ना, नयनम्=ले जाना, पचनम्=पकाना, पठनम्=पढ़ना, पतनम्=गिरना, पर्यटनम्=घूमना, पाठनम्=पढ़ाना, पृच्छनम्=पूंछना, प्रेषणम्=भेजना, भाषणम्=कहना, भेदनम्=भेदना।

भ्रमणम्=घूमना, वादनम्=कहना, विक्रयणम्=वेचना, रोदनम्=रोना, लेखनम्=लिखना, शयनम्=सोना, शोधनम्=शोधना, श्रवणम्=सुनना, सेवनम्=सेवन, स्मरणम्=याद करना, हननम्=मारना, हसनम्=हँसना।

नोट—इनके रूप नपुंसक लिंग में ज्ञानशब्द के समान चलते हैं। इनका कर्म षष्ठ्यन्त होता है। जैसे—रामस्य अनुकरणम्। सीतायाः अन्वेषणम् इत्यादि।

आदानमशनं चैव, उत्थानमुपवेशनम्।
कथनं करणं चैव, क्रयणं क्षेपणं तथा ॥१॥
खननं गमनं गानं, चयनं चर्वणं पुनः।
जागरणं ज्ञानं चैव, तर्जनं तोलनं तथा ॥२॥
दर्शनं धावनं दानं, नयनं पचनं ततः।

Scanned by CamScanner

पठनं प्रचनं चैव, पर्यटनञ्च पाठनम् ॥३॥
प्रच्छनं प्रेषणं चैव, भाषणं भेदनं तथा ।
भ्रमणं वादनं वहनं विक्रयणञ्च रोदनम् ॥४॥
लेखनं शयनं चैव, शोधनं श्रवणं तथा।
स्मरणं हननं चैव, हसनमिति ज्ञायताम् ॥५॥

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. अधिकं जागरणम् आरोग्य हरति । २. आदानात् दानं प्रशस्तं गणयामि । ३. आर्याः दानं विना न तुष्यन्ति । ४. जिनस्य दर्शनात् पापं नश्यति । ५. ते सुरेशस्य अनुकरणं पश्यन्ति । निजायाः जातेः, उत्थानं विधेयम् । ७. पठनात्पर हित नास्ति । ८. परकीयस्य धनस्य हरण नो विधेयम् ।

९. प्रातः जगदीशस्य स्मरण विधेयम् । १०. मूर्खाः अन्येषां लेखनं पश्यन्ति । ११. मार्गे अशनं वरं नास्ति । १२. रोदनं बालानां बलं मतम् । १३. वेश्यायाः गानं न श्रोतव्यम् । १४. हस्त्रामाद् धावनं दौर्बल्यं सूचयति ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अधिक खाने पर (अशने) रोग हो जाते हैं । २. अधिक जागरण से आरोग्य नष्ट होता है । ३. अधिक शयन अच्छा नहीं । अधिक हसन से सभ्यता नष्ट हो जाती है । ५ असत्य का वादन अनर्थ करता है । ६. उत्थान की इच्छा किसको नहीं होती । ७. उसका लेखन आपने देखा ।

८. दान दैनिक कर्तव्य होना चाहिये । ९. प्रभा का गान सुन्दर है । १०. प्रातः पठन अच्छा माना गया है । ११. मेरा वचन तूने नहीं सुना । १२. मैंने उसका रोना नहीं सुना । १३. शाला का उद्‌घाटन कब है ? १४. हम सब आपके आगमन को चाहते हैं ।

Scanned by CamScanner

नवमः पाठः

णवुल् प्रत्यान्त कृदन्त शब्द

अध्यापकः=पढ़ाने वाला, गुरु, अर्चकः=पूजा करने वाला, आलोचकः=देखने वाला या गुण दोष की समीक्षा करने वाला, आशकः=खानेवाला, आह्वायकः=बुलानेवाला, कारकः=करने वाला, क्रायकः=खरीदने वाला, क्रीडकः=खेलने वाला, गायकः=गाने वाला, घर्षकः=घिसने वाला, चर्वकः=चबाने वाला, चूसकः=चूसने वाला।

तोदकः=छेदने वाला, दोहकः=दोहने वाला, धारकः=धरने वाला, नायकः=नेता या लीडर, निन्दकः=निन्दा करनेवाला, निवारकः=रोकनेवाला, पाचकः=पकाने वाला, पाठकः=पढ़ाने वाला, पूजकः=पूजा करने वाला, पृच्छकः=पूछने वाला, बोधकः=जताने वाला, भक्षकः=खाने वाला, भारकः=ढोने वाला; बुझिया या कुली।

मोहकः=मोहने वाला, याचकः=माँगने वाला, रक्षकः=रक्षा करनेवाला, रञ्जकः=रँगनेवाला, रोधकः=रोकने वाला, लम्बकः=लटकने वाला, लेहकः चाटने वाला, वाचकः=बाँचनेवाला, वापकः=बोनेवाला, विक्रायकः=बेचनेवाला व्ययकः=खर्च करने वाला, शायकः=सोनेवाला, हारकः=चुराने वाला। इनके रूप बालशब्द के समान होते हैं।

नोट – इन शब्दों के अन्त में आ और बीच में इ लगा देने से ये शब्द स्त्रीवाचक हो जाते हैं और उनके रूप लताशब्द के समान चलने लगते हैं। जैसे– अध्यापिका, कारिका, पाचिका इत्यादि।

Scanned by CamScanner

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

पक्षपातः=पक्ष लेना, पराजयः=हार, पराभवः=तिरस्कार, परिचयः=पहचान, परिपाकः=नतीजा, परिहासः=हँसी, परोपकारः=उपकार, पश्चात्तापः=पछतावा, पातः=गिरना, प्रकारः=भेद, प्रणः=प्रतिज्ञा, प्रणयः=स्नेह, प्रणामः=प्रणाम, प्रतिग्रहः=दान लेना, प्रपञ्चः=जाल, प्रभावः=बोल वाला।

प्रमादः=आलस्य, प्रयत्नः=परिश्रम, प्रलापः=बकवाद, प्रसंगः=चर्चा, बन्धः=बांधना, बाधः=रुकावट, बोधः=ज्ञान, भागः=हिस्सा, भावः=परिणाम, मत्सरः=डाह, मनोरथः=अभिप्राय, मेलः=मेल, मोक्षः=मोक्ष, मोदः=आनन्द, रागः=प्रीति, रोधः=रोक, रोषः=क्रोध, लाभः=फायदा, लेपः=लेप, लोभः=लोभ।

वर्गः=समुदाय, वर्णः=रंग, अक्षर या ब्राह्मणादि वर्ण, विकल्पः=सन्देह, विकारः=तबदीली, विक्रयः=बिक्री, विजयः=जीत, विनिमयः=परिवर्तन, विनोदः=खेल, विरहः विप्रयोगः=जुदाई, विश्लेषः=वियोग, विवादः=झगड़ा, विवेकः=सभ्यता, विशदः=साफ, विश्वासः=विश्वास, विस्मयः=आश्चर्य, वेगः=शीघ्रता, व्ययः=खर्च, व्यवहारः=व्यवहार।

व्यवसायः व्यापारः=रोजगार या पेशा, व्यायामः=कसरत, शपथः=सौगन्ध, श्रमः=परिश्रम, सङ्कल्पः=इरादा, सङ्केतः=इशारा, सत्कार=आदर, सदाचारः=सदाचरण, समः=बराबर, समादरः=आदर, समासः=मेल, सहयोगः=सहाय, साक्षात्कारः=प्रत्यक्षता, सारः=निचोड़, साधारः=सप्रमाण, सेकः=सींचना, स्वादः=स्वाद।

Scanned by CamScanner

रूप, रस स्पर्शादिवाचक शब्द

अक्षरम् = अक्षर, वर्ण, अम्लम् = खट्टा, आर्द्रम् = गीला, उष्णम् = गर्म, कटुकम् = कड़ुवा, कठिनम् = कड़ा, कपिशम् = पीला, कषायम् = कषायला, कोमलम् = कोमल, क्षारम् = खारा, गन्धः = गन्ध, गुरुकम् = भारी, गौरम् = सफेद, चिक्कणम् = चिकना, चित्रम् = चितकबरा ।

तिक्तम् = चरपरा, दुर्गन्धः = दुर्गन्ध, नीलम् = नीला पाटलम = गुलाबी, मधुरम् = मीठा, मिष्टम् = मीठा, रक्तम् = लाल, रूक्षम = रूखा, लघुकम् = हलका, शीतम = ठण्डा, शुक्लं श्वेतम् = सफेद, सुगन्धः = सुगन्ध, हरितम् = हरा ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अत्र विकल्पः (सन्देहः) नास्ति । २. अधिकं क्षारम् लवणं वा नो भोक्तव्यम् । ३. अस्मात् जयात् पराजयः वरम् । ४ अस्य परिपाकः वरं नास्ति । ५. आर्याः पक्षपातं कदापि नो कुर्वन्ति । ६. गायकाः दिने नो स्वपन्ति । ७. त्रयः वर्णाः नाभिसूनुना निर्मिताः । ८. त्वयि सर्वेषां समादरः अस्ति । ९. दोहकाः गोष्ठं रचयन्ति । १०. नायकाः भवितुं के न वाञ्छन्ति । ११. परिहासः कलेः मूलं मतम् ।

१२. परोपकारः पुण्याय, पापाय च पीडनम् । १३. पाचकेन ऊनं पक्वम् । १४. पाठकाः धृष्टान् शिशून् विदन्ति । १५. भावः हि पुण्याय मतः, शुभः पापाय चाशुभः । १६. रक्षकाः कतिपयाः एव भवन्ति, भक्षकाः सर्वत्र मिलन्ति । १७. व्यापारे आय-व्ययः वा द्वौ एव भवतः । १८. व्यायामे सर्वैः रागः विधेयः । १९. विक्रायकाः वस्तूनि भूषयन्ति ।]

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१ अध्यापक शिष्यों को ठीक नहीं पढाते हैं। २ इस व्यापार में उनका भी हिस्सा है। ३. क्या मेरे पर विश्वास नहीं है। गायको ने गान गाया। ५. निन्दक निन्दा करते थे। ६. पक्षपात सदा हेय है। ७. पाठक ने पढ़ाया, बालक ने रोया। ८. भोजन ठण्डा हो गया क्या? ९. मेल सबसे रखना चाहिये। १०. मोटे अक्षर लिखना चाहिये, पतले नहीं।

११. याचक को भिक्षा देता हूँ। १२. व्यर्थ व्यय नहीं करना चाहिये। १३. व्यापार में विवेक रखना चाहिये। १४. लाभों को देखकर यहां आया। १५. लोभ मानव को दानव कर देता है। १६. सज्जन सबको बराबर गिनते हैं। १७. सोने वाले सोते हैं, करने वाले करते हैं। १८. रक्षक अकारण रक्षा करते हैं। १९. लाभ और अलाभ में राग और द्वेष नहीं करना चाहिये।

Scanned by CamScanner

दशमः पाठः

पठ् धातु के रूप

लिट्लकार, परोक्षभूत

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
मध्यम पु.	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
उत्तम पु.	पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम

अर्थ वह पढ़ता था, वे दोनों पढ़ते थे, वे सब पढ़ते थे। तू पढ़ता था, तुम दोनों पढ़ते थे, तुम सब पढ़ते थे। मैं पढ़ता था, हम दोनों पढ़ते थे, हम सब पढ़ते थे।

लुट्लकार, अनद्यतन भविष्य

प्रथम पु.	पठिता	पठितारौ	पठितारः
मध्यम पु.	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ
उत्तम पु.	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः

अर्थ—वह पढ़ेगा, वे दोनों पढ़ेंगे, वे सब पढ़ेंगे। तू पढ़ेगा, तुम दोनों पढ़ोगे, तुम सब पढ़ोगे। मैं पढ़ूंगा, हम दोनों पढ़ेंग, हम सब पढ़ेंगे।

लुट्लकार, सामान्य भविष्य

प्रथम पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पु.	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

Scanned by CamScanner

अर्थ—इस लकार का अर्थ लुट्लकार के समान होता है। दोनों में अनद्यतनपन और सामान्यपन का अन्तर है।

आज्ञा लोट्लकार

प्रथम पु.	पठतु (तात्)	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पु.	पठ (तात्)	पठतम्	पठत
उत्तम पु.	पठानि	पठाव	पठाम

अर्थ—वह पढ़े, वे दोनों पढ़ें, वे सब पढ़ें। तू पढ़, तुम दोनों पढ़ो, तुम सब पढ़ो। मैं पढ़ूं, हम दोनों पढ़ें, हम सब पढ़ें।

लङ्लकार अनद्यतनभूत

प्रथम पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

अर्थ – वह पढ़ा, वे दोनों पढ़े, वे सब पढ़े। तू पढ़ा, तुम दोनों पढ़े, तुम सब पढ़। मैं पढ़ा, हम दोनों पढ़, हम सब पढ़ें।

विधिलिङ् लकार

प्रथम पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पु.	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पु.	पठेयम्	पठेव	पठेम

अर्थ—उसे पढ़ना चाहिये, उन दोनों को पढ़ना चाहिये, उन सबको पढ़ना चाहिये। तुझे पढ़ना चाहिये, तुम दोनों को पढ़ना चाहिये, तुम सबको पढ़ना चाहिये। मुझे पढ़ना चाहिये, हम दोनों को पढ़ना चाहिये, हम सबको पढ़ना चाहिये।

Scanned by CamScanner

पठ् धातु के रूप

लुङ्लकार सामान्यभूत

प्रथम पु	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
मध्यम पु.	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
उत्तम पु.	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

अर्थ—वह पढ़ा था, उन दोनों ने पढ़ा, उन सबने पढ़ा था। तूने पढ़ा था, तुम दोनों ने पढ़ा था, तुम सबने पढ़ा था। मैंने पढ़ा था, हम दोनों ने पढ़ा था, हम सबने पढ़ा था।

लृङ्लकार क्रियातिपत्ति

प्रथम पु.	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम	अपठिष्यन्
मध्यम पु.	अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत
उत्तम पु.	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

भ्वादि गम् धातु=जाना

लट् गच्छति=वह जाता है, लिट् जगाम=वह गया था,
लृट् गमिष्यति=वह जावेगा, लोट् गच्छतु=वह जावे,
लङ् अगच्छत्=वह गया, लुङ् अगमत्=वह गया था,

लिट् लकार			लुङ् लकार		
जगाम	जग्मतुः	जग्मुः,	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
जग्मिथ	जग्मथुः	जग्म,	अगमः	अगमतम्	अगमत
जगाम	जग्मिव	जग्मिम,	अगमम्	अगमाव	अगमाम

लिट्लकार मध्यमपुरुष के एकवचन में जगन्थ तथा उत्तम पुरुष के एकवचन में जगम रूप भी होता है।

Scanned by CamScanner

भ्वादि दृश् धातु = देखना

लट् पश्यति = वह देखता है, लिट् = ददर्श = उसने देखा था,
लृट् द्रक्ष्यति = वह देखेगा, लोट् = पश्यतु = वह देखे,
लङ् अपश्यत् = उसने देखा, लृङ् = अदर्शत् = उसने देखा था,

लिट्लकार			लृङ्लकार		
ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः,	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
ददर्ष्ठ	ददृशथुः	ददृश,	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
ददर्श	ददृशिव	ददृशिम,	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अहं गुरोः पठिष्यामि। २. इदानीं क्व गच्छति देवः। ३. किम् पठेम वयं गुरो ? ४. किम् यूयं प्रातः नो पठथ ? ५. गृहे किम् न पठन्ति भवन्तः ? ६. तत्र त्वं तां द्रक्ष्यसि, अहं त्वां द्रक्ष्यामि। ७. तस्याः शालायाः नाम वदत।

८. पतिं हित्वा जगाम सा। ९. पुस्तकं किम् न पश्यसि। १०. भृत्यानां कार्यं भवन्तः पश्यन्तु। ११. युवां कुतः आगच्छथः। १२. यूयं गृहं कदा आगमत ? १३. वयं लिखित्वा एव पेठिम।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप सब भोजन कर शीघ्र जावें। २. ईश्वर सब जगह देखता है। ३. जब वह आती है, तभी यह जाती है और तभी मैं जाती हूँ। ४. तुम वहां मत देखो। ५. मैं आप से नहीं पढ़ना चाहता हूँ। ६. मैंने कल पढ़ाया था।

७. वह गांव में (ग्रामं) गया। ८. वह सदा पराई वस्तु को देखता है। ९. वहां कौन कौन गये। १०. वे सब भोजन कर शीघ्र घर जावें। ११. वे सब मिलकर जावेंगे। १२. वे सब यथास्थान गये। १३. श्रीमती वहां नहीं जाती थीं। १४. सुरेश कल नहीं पढ़ेगा।

Scanned by CamScanner

एकादशः पाठः

भ्वादि नी धातु=ले जाना

लट नयति=वह ले जाता है, लिट् निनाय=वह लाया था,
लृट् नेष्यति=वह ले जावेगा, लोट नयतु=वह ले जावे,
लङ् अनयत्=वह ले गया, लुङ् अनैषीत्=वह ले गया था,

लिट्लकार			लुङ्लकार		
निनाय	निन्यतुः	निन्युः,	अनैषीत	अनैष्टाम्	अनैषुः
निन्यिथ	निन्यथुः	निन्य,	अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट
निनाय	निन्यिव	निन्यिम,	अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म

लिट्लकार के मध्यम पु० के एकवचन में निनेथ रूप भी होता है।

भ्वादि पा धातु=पीना

लट पिबति=वह पीता है, लिट् पपौ=वह पीता था,
लृट् पास्यति=वह पीवेगा, लोट् पिबतु=वह पीवे,
लङ् अपिबत्=उसने पिया, लुङ् अपात्=उसने पिया था,

लिट्लकार			लुङ्लकार		
पपौ	पपतुः	पपुः,	अपात्	अपाताम्	अपुः
पपिथ	पपथुः	पप,	अपाः	अपातम्	अपात
पपौ	पपिव	पपिम	अपाम्	अपाव	अपाम

लिट्लकार के मध्यम पु० एकवचन में पपाथ रूप भी होता है।

Scanned by CamScanner

भू धातु=होना, के रूप

लट् भवति=वह होता है, लिट् बभूव=वह हुआ था,
लृट् भविष्यति=वह होगा, लोट् भवतु=वह होवे,
लङ् अभवत्=वह हुआ, लिङ् भवेत्=उसे होना चाहिए
लुङ् अभूत्=वह हुआ था, लृङ् अभविष्यत्=वह होगा।

लिट् लकार			लुङ् लकार		
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः,	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव,	अभूः	अभूतम्	अभूत
बभूव	बभूविव	बभूविम,	अभूवम्	अभूव	अभूम

अर्थ—वह हुआ था, वे दोनों हुए थे, वे सब हुए थे। तू हुआ था, तुम दोनों हुए थे, तुम सब हुए थे। मैं हुआ था, हम दोनों हुए थे, हम सब हुए थे।

भ्वादि श्रुधातु=सुनना

लट् शृणोति=वह सुनता है, लिट् शुश्राव=उसने सुना था,
लृट् श्रोष्यति=वह सुनेगा, लोट् शृणोतु=वह सुने,
लङ् अशृणोत्=उसने सुना, लुङ् अश्रौषीत्=उसने सुना था,

लिट् लकार			लुङ् लकार		
शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः,	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव,	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
शुश्राव	शुश्रुव	शुश्रुम,	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

भ्वादि स्था धातु=ठहरना

लट् तिष्ठति=वह ठहरता है, लिट् तस्थौ=वह ठहरा था,
लृट् स्थास्यति=वह ठहरेगा, लोट् तिष्ठतु=वह ठहरे,
लङ् अतिष्ठत्=वह ठहरा, लुङ् अस्थात्=वह ठहरा था,

Scanned by CamScanner

लिट्लकार	लुङ्लकार
स्तथौ तस्थतुः तस्थुः,	अस्थात् अस्थाताम् अस्थुः
तस्थिथ तस्थथुः तस्थ,	अस्थाः अस्थातम् अस्थात,
तस्थौ तस्थिव तस्थिम,	अस्थाम् अस्थाव अस्थाम,

लिट्लकार के मध्यमपुरुष के एकवचन में तस्थाथ रूप भी होता है ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. ग्रामं तां निनाय सः । २. जैना मद्यं न पास्यन्ति । ३. त्वं तदीयं गुह्यम् अश्रौषीः । ४. त्वं तां कुत्र नेष्यसि । ५. पुरा पृथिव्यां जैनानां राज्यम् अभूत् । ६. भवन्तौ मानवौ कदा भविष्यतः । ७. भवन्तः जलमेव पिबन्तु । ८. मदीयं वचनं न शृणोषि। ९. यादृशी भावना यस्य, सिद्धिः भवति तादृशी। १०. यूयं तस्य गानम् अश्रौष्ट। ११. सः तत्र तस्थौ । १२. साम्राज्यं प्रातः लब्ध्वा, सायं दूरे अभवत् तदा ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप सब जल पीजिये । २. उनमें कोई धार्मिक हुए (बभूवुः) । ३. तुम दोनों वहाँ जल पीते थे । ४. तुम सब मनुष्य कब होओगे । ५. तू सुधा को यहाँ से वहाँ ले जा । ६. वह मुझे अपने घर (गृहम्) ले गया । ७. विवेकी मानव मदिरा नहीं पीते । ८. वीणा में उसने जीत लिया (जिगाय सा) । ९. वे सब उसके वक्तव्य को सुनते थे । १०. वे सब यहाँ ठहरे थे । ११. हम सब गुरु से धर्म को सुनते हैं ।

———

Scanned by CamScanner

द्वादशः पाठः

भ्वादि निपूर्वक षिध् धातु=मना करना

लट्	निषेधति	= वह मना करता है।
लिट्	निषिषेध	= वह मना करता था।
लृट्	निषेधिष्यति	= वह मना करेगा।
लोट्	निषेधतु	= वह मना करे।
लङ्	न्यषेधत्	= उसने मना किया।
लुङ्	न्यषेधीत्	= उसने मना किया था।

लिट्लकार

प्रथम पु.	निषिषेध	निषिषिधतुः	निषिषिधुः
मध्यम पु.	निषिषेधिथ	निषिषिधथुः	निषिषिध
उत्तम पु.	निषिषेध	निषिषिधिव	निषिषिधिम

लिट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में निषिषेद्ध रूप भी होता है।

लुङ्लकार

प्रथम पु.	न्यषेधीत्	न्यषेधिष्टाम्	न्यषेधिषुः
मध्यम पु.	न्यषेधीः	न्यषेधिष्टम्	न्यषेधिष्ट
उत्तम पु.	न्यषेधिषम्	न्यषेधिष्व	न्यषेधिष्म

अदादि अस् धातु=होना

लट्	अस्ति =वह है,	लिट्	बभूव =वह हुआ था,
लृट्	भविष्यति=वह होगा,	लोट्	अस्तु =वह होवे,
लङ्	आसीत् =वह हुआ,	लुङ्	अभूत् =वह हुआ था,

Scanned by CamScanner

प्रथम	अस्तु	स्ताम्	सन्तु,	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम	एधि	स्तम्	स्त,	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम	असानि	असाव	असाम,	आसम्	आस्व	आस्म

अदादि हन् धातु=मारना

लट् हन्ति=वह मारता है, लिट् जघान=उसने मारा था,
लृट् हनिष्यति=वह मारेगा, लोट् हन्तु=वह मारे,
लङ् अहन्=उसने मारा, लुङ् अवधीत्=उसने मारा था,

लट्लकार

हन्ति	हतः	घ्नन्ति,	जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
हन्सि	हथः	हथ,	जघ्निथ	जघ्नथुः	जघ्न
हन्मि	हन्वः	हन्मः,	जघान	जघ्निव	जघ्निम

लिट्लकार मध्यम पु० के एकवचन में जघन्थ तथा उत्तम पु० के एकवचन में जघन रूप भी होता है।

लोट्लकार

हन्तु	हताम्	घ्नन्तु,	अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
जहि	हतम्	हत,	अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट
हनानि	हनाव	हनाम,	अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म

जुहोत्यादि दा धातु=देना

लट् ददाति=वह देता है, लिट् ददौ=वह देता था,
लृट् दास्यति=वह देगा, लोट् ददातु=यह देवे,
लङ् अददात्=उसने दिया, लुङ् अदात्=उसने दिया था,

लिट्लकार

ददौ	ददतुः	ददुः,	ददातु	दत्ताम्	ददतु
ददिथ	ददथुः	दद,	देहि	दत्तम्	दत्त
ददौ	ददिव	ददिम,	ददानि	ददाव	ददाम

लोट्लकार

Scanned by CamScanner

लुङ्लकार

अदात्	अदाताम्	अदुः
अदाः	अदातम्	अदात
अदाम्	अदाव	अदाम

तुदादि प्रच्छ धातु=पूछना

लट् पृच्छति=वह पूछता है, लिट् पप्रच्छ=वह पूछता था,
लृङ् प्रक्ष्यति=वह पूछेगा, लोट् पृच्छतु=वह पूछे,
लङ् अपृच्छत्=उसने पूछा, लुङ् अप्राक्षीत्=उसने पूछा था,

लिट्लकार			लुङ्लकार		
पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः,	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ,	अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम,	अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. आशां ददतु ते तस्मै । २. आवां किं किं न दास्यावः । ३. ते तत्र गन्तुं निषेधिष्यन्ति । ४ ते तत्र यतुं निषेधन्ति । ५. ते भोजनाय न अप्राक्षुः । ६. त्वं सूकरम् अवधीः । ७ न कोऽपि कस्यापि ददाति किञ्चन । ८. नृपः आत्मीयान् भवान् पपृच्छ । ९. मांसिकाः अजान् घ्नन्ति । १०. यथा वाञ्छसि तथा अस्तु । ११. सत्यात् नास्ति परः धर्मः । १२. साम्प्रतं पृच्छन्तु भवन्तुः ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप भोजन के हेतु कब पूछोगे । २. गुरु को भेंट शीघ्र देओ । ३. तुम इस समय क्या देओगे । ४. तुम कहाँ (क्व) चली गई हो (यासि) । ५. तुम लोग गाय को मत मारो । ६. तुम शीघ्र उसे मना करो । ७. नौकर जल देने को पूछता है । ८. राजा वन में व्याघ्र को मारेगा । ९. वहाँ एक ब्राह्मण था । १०. शास्त्र मदिरा-पान को मना करते हैं ।

Scanned by CamScanner

त्र यो द श: पा ठ:

तुदादि लिख् धातु=लिखना

लृट् लिखति =वहलिखताहै, लिट्लिलेख=वह लिखता था
लृट्लिखिष्यति=वह लिखेगा, लोट् लिखतु=वह लिखे,
लङ् अलिखत्=उसने लिखा, लुङ् अलेखीत्=उसनेलिखाथा

तनादि कृ धातु=करना

लट् करोति =वह करता है, लिट् चकार=वह करता था,
लृट् करिष्यति=वह करेगा, लोट् करोतु=वह करे,
लङ् अकरोत्=उसने किया; लुङ् अकार्षीत्=उसने कियाथा,

लिट्लकार			लोट्लकार		
चकार	चक्रतु:	चक्रु:,	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु,
चकर्थ	चक्रथु:	चक्र,	कुरु	कुरुतम्	कुरुत,
चकार	चकृव	चकृम,	करवाणि	करवाव	करवाम,

लुङ्लकार

अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षु:
अकार्षी:	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
अकार्षम	अकार्ष्व	अकार्ष्म

क्र्यादि ज्ञा धातु=जानना

लट् जानाति=वह जानता है, लिट् जज्ञौ=वह जानता था,
लृट् ज्ञास्यति=वह जानेगा, लोट् जानातु=वह जाने,
लङ् अज्ञासीत्=उसने जाना, लुङ् अजानात्=उसने जानाथा

Scanned by CamScanner

लिट्लकार			लोट्लकार		
जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः,	जानातु	जानीताम्	जानन्तु,
जज्ञिथ	जज्ञथुः	जज्ञ,	जानीहि	जानीतम्	जानीत,
जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम,	जानानि	जानाव	जानाम,

लुङ्लकार

अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः
अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म

क्रयादि क्रीञ् धातु=खरीदना

लट् सः क्रीणाति=वह खरीदता है,
लिट् सः चिक्राय=वह खरीदता था,
लृट् सः क्रेष्यति=वह खरीदेगा,
लोट् सः क्रीणातु=वह खरीदे,
लङ् सः अक्रीणात्=उसने खरीदा,
लुङ् सः अक्रैषीत्=उसने खरीदा था,

लिट्लकार

प्रथम पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
मध्यम पु०	चिक्रयिथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उत्तम पु०	चिक्राय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

लङ्लकार

प्रथम पु०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
मध्यम पु०	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
उत्तम पु०	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

Scanned by CamScanner

पितरं प्रति पत्रम्

श्रीमत्सु पूज्येषु पितृचरणकमलेषु सविनयं निवेदयते ।

पूज्यवर्य! बहूनि दिनानि व्यतीतानि, यदद्यापि कृपापत्रं नागतम् । विलम्ब किं कारणमिति लेखनीयम ।

एतत्तु भवता विदितमेव, यदयं शीतकालः समायातः । मम पार्श्वे न किमपि धनं, न परिधानाय शयनाच्छादनाय च वस्त्राणि सन्ति । तत् पत्र-वाचनान तरमेव पञ्चाशत् चत्वारिंशत वा रूप्यकाणि प्रेषणीयानि।

वैशाखे शुक्लतृतीयायाः आरभ्य नवमीं यावत् अस्माकं वार्षिकी परीक्षा भविष्यति । तदैव मम भ्रातुरपि परीक्षा भविष्यति । आवां द्वावपि परीक्षां दत्वा भवतो मातुश्च चरणौ द्रक्ष्यावः ।

पुत्रः हरिश्चन्द्रः

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अतृप्ताः मानवाः सर्वे याताः यास्यन्त यान्ति च । २. अद्यप्रभृति पातकं न करिष्ये । ३. आयं व्ययं वा मातुलः लिलेख । ४ कः जानाति विधेः गतिम् । ५. कर्त्तव्यम् अद्य एव कुरुत । ६. कलानां चतुःषष्ठिं जानासि । ७. क्षिप्रं सद्यः क्रीणीहि । ८. पुस्तकं कदा क्रेष्यसि । ९. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम् ? १०. सद्यः लिखन्तु भवन्तः । ११. सागरे इति रत्ना नि नैव जानाति कश्चन ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. अभी ही (इदानीम् एव) करता हूँ । २. क्या तुम सब जानते हो ? ३. तीन पुस्तकें खरीदूंगा । ४. मुझे (माम्) ये पुद्गल (पुद्गलाः) अच्छे नहीं लगते (भान्ति) । ५. मैं सबेरे लिखूंगा । ६. वह अभी लिखे । ७. हम सदा इसी प्रकार (एवमेव) करते हैं (कुमः) । ८. हाँ मैं सब जानता हूँ ।

Scanned by CamScanner

चतुर्दशः पाठः

आत्मनेपदी लभ् धातु=पाना

प्रथम पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पु.	लभे	लभावहे	लभामहे

अर्थ—वह पाता है, ये दोनों पाते हैं, ये सब पाते हैं। तू पाता है, तुम दोनों पाते हो, तुम सब पाते हो। मैं पाता हूँ, हम दोनों पाते हैं, हम सब पाते हैं।

आत्मनेपदी धातु वर्ग

ईक्षते=देखता है,
ईहते=चाहता है,
कम्पते=कँपता है,
कल्पते=समर्थ है,
क्षमते=सहता है,
गाहते=घुसता है,
पचते=पकाता है,
बाधते=पीड़ा देता है,
भजते=सेवा करता है,
भाषते=कहता है,
मन्यते=मानता है,
महीयते=पूजा जाता है,
यजते=पूजता है,
यतते=यत्न करता है,
याचते=मांगता है,
राजते=शोभता है,
रोचते=रुचता है,
रोहते=ऊँगता है,
लंघते=लाँघता है,
लम्बते=लटकता है,
वन्दते=प्रणाम करता है,
वर्तते=होता है,
वर्धते=बढ़ता है,
वेपते=कँपता है,
शंकते=शंका करता है,
शोचते=शोक करता है।
श्लाघते=तारीफ करता है,
सहते=सहता है,
सेवते=सेवा करता है,
स्पर्धते=डाह करता है।

Scanned by CamScanner

आत्मनेपदी मोद् धातु—खुश होना

लट्लकार			लिट्लकार		
मोदते	मोदेते	मोदन्ते,	मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे,
मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे,	मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदध्वे
मोदे	मोदावहे	मोदामहे,	मुमुदे	मुमुद्वहे	मुमुमहे

लुट्लकार

प्रथम पु०	मोदिता	मोदितारौ	मोदितारः
मध्यम पु०	मोदितासे	मोदितासाथे	मोदिताःध्वे
उत्तम पु०	मोदिताहे	मोदितास्वहे	मोदितास्महे

लृट्लकार

प्रथम पु०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
मध्यम पु०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उत्तम पु०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

लोट्लकार

प्रथम पु०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
मध्यम पु०	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उत्तम पु०	मोदै	मोदावहै	मादामहै

लङ्लकार

प्रथम पु०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
मध्यम पु०	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोद्ध्वम्
उत्तम पु०	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

लिङ्लकार

प्रथम पु०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
मध्यम पु०	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उत्तम पु०	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

Scanned by CamScanner

लुङ्लकार

प्रथम पु.	अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत
मध्यम पु.	अमोदिष्ठाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिढ्वम्
उत्तम पु.	अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि

लृङ्लकार

प्रथम पु.	अमोदिष्यत	अमोदिष्येताम्	अमोदिष्यन्त
मध्यम पु.	अमोदिष्यथाः	अमोदिष्येथाम्	अमोदिष्यध्वम्
उत्तम पु.	अमोदिष्ये	अमोदिष्यावहि	अमोदिष्यामहि

नोट - लुङ्लकार म० पु० बहु० में अमोदिढ्वम् भी होता है। इस धातु के सभी लकारों के अर्थं सहधातु के समान बनाना चाहिये।

भ्वादि आत्मं० वृत् धातु=होना

लट् वर्तते=वह होता है, लिट् ववृते=वह होता था,
लृट् वर्तिष्यते=वह होगा, लोट् वर्तताम्=वह होवे,
लङ् अवर्तत=वह हुआ, लुङ् अवर्तिष्ट=वह होता था,

नोट—लृट्लकार में वर्त्स्यति, लुङ्लकार में अवृतत् तथा लृङ्लकार में अवर्त्स्यत् वा अवर्तिष्यत आदि रूप भी होते हैं।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अस्य कार्यं स्वयम् ईक्षस्व। २. अहं दुःखं सहे, त्वं सहस्व। ३. अहं नृपतेः दानं लभे। ४. जैनाः जिनं भजन्ते। ५. तव अनुजाद् कः सहेत। ६. तुभ्यं धर्मः न रोचते। ७. ते एवं कर्तुं नो क्षमन्ते। ८. देवाः स्वर्गे महीयन्ते। ९. नृपं धनं याचते। १०. बुधाः मोक्षाय यतन्ते। ११. भवदीयं भवनं कुत्र वर्तते।

Scanned by CamScanner

१२. भवन्तः तस्मै एवं लेखितुं कल्पन्ते। १३. भूपः राज्यम् अकृत। १४. मयि गुरोः स्नेहः वर्धते। १५. यावत् असौ जीवति, तावत् अमुं सेवस्व। १६. यूयं मिथः किं भाषध्वे। १७. वन्दे वीरम्। १८. वयम् उत्तरं नो लभामहे। १९. वयस्यानाम् उन्नतौ मानवाः मोदन्ते। २०. विद्याहीना न शोभन्ते।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप वहां क्या देखते थे (ऐक्षन्त, ईक्षन्ते स्म)। २. गुरु भेंट चाहते हैं (ईहन्ते) ३. गृहस्थ अतिथियों को सेवते हैं. ४. दूसरे (अन्ये) उसे सेवते थे (सिसेविरे)। ५. धन के लिये सब यत्न करते हैं। ६. बलि से (बलि) वसुधा को मांगता है (याचते)। ७. बालक आनन्द को पाते हैं (लभन्ते)। ८. भिक्षु भीख मांगता था (अयाचत)।

९. मार्ग में खाना (अशनम्) अच्छा नहीं होता (वर्तते)। १०. मुझे देखकर वे मुदित होते हैं। ११. मुझे (मह्यम्) यह नहीं रुचता। १२. मैं उसकी बात नहीं सहता हूँ। १३. वह ऐसा असत्य (अतत्त्वम्) क्यों कहता है (भाषते)। १४. वह यहां नहीं है वर्तते) १५. शोक बिच में स्थान (पदम्) नहीं पा सका (लेभे)। १६. सभी मुझसे (मह्यम्) स्पर्धा करते हैं (स्पर्धन्ते)। १७. हम सब गुरु को वन्दते हैं। १८. हाथ (पाणिः) दान से शोभता है।

——

Scanned by CamScanner

पञ्चदशः पाठः

अदादि गणी शीङ् धातु—सोना,

लट् शेते=वह सोता है, लिट् शिश्ये=वह सोता था,
लृट् शयिष्यते=वह सोवेगा, लोट् शेताम्=वह सोवे,
लङ् अशेत=उसने सोया, लुङ् अशयिष्ट=उसने सोया था,

	लट्लकार		लिट्लकार		
	शेते	शयाते शेरते,	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
	शेषे	शयाथे शेध्वे,	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे
	शये	शेवहे शेमहे,	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

लृट्लकार

प्रथम पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
मध्यम पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उत्तम पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट्लकार

प्रथम पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
मध्यम पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उत्तम पु०	शयै	शयावहै	शयामहै

लुङ्लकार

प्रथम पु०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
मध्यम पु०	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
उत्तम पु०	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

जुहोत्यादि गणी आपूर्वक दा धातु

लट् आदत्ते=वह लेता है, लिट् आददे=उसने लिया था,
लृट आदास्यते=वह लेगा, लोट् आदत्ताम्=वह लेवे,
लङ् आदत्त=उसने लिया, लुङ् आदित=उसने लिया था,

Scanned by CamScanner

लट् लकार

प्रथम पु०	आदत्ते	आददाते	आददते
मध्यम पु०	आदत्से	आददाथे	आदद्ध्वे
उत्तम पु०	आददे	आदद्वहे	आदद्महे

लोट् लकार

प्रथम पु०	आदत्ताम्	आददाताम्	आददताम्
मध्यम पु०	आदत्स्व	आददाथाम्	आदद्ध्वम्
उत्तम पु०	आददै	आददावहै	आददामहै

लुङ् लकार

प्रथम पु०	आदित	आदिषाताम्	आदिषत
मध्यम पु०	आदिष्ठाः	आदिषाथाम्	आदिड्ढ्वम्
उत्तम पु०	आदिषि	आदिष्वहि	आदिष्महि

दिवादि मन् धातु=मानना

लट् मन्यते=वह मानता है, लिट् मेने=उसने माना था,
लृट् मंस्यते=वह मानेगा, लोट् मन्यताम्=वह माने,
लङ् अमन्यत=उसने माना, लुङ् अमंस्त=उसने माना था,

लट् लकार			लृट् लकार		
मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते,	मंस्यते	मंस्येते	मंस्यन्ते
मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे,	मंस्यसे	मंस्येथे	मंस्यध्वे
मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे,	मंस्ये	मंस्यावहे	मंस्यामहे

लोट् लकार			लुङ् लकार		
मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्,	अमंस्त	अमंसाताम्	अमंसत
मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्,	अमंस्थाः	अमंसाथाम्	अमंध्वम्
मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै,	अमंसि	अमंस्वहि	अमंस्महि

Scanned by CamScanner

दिवादि गणी विद् धातु=होना,!

लट् विद्यते=वह होता है, लिट् विविदे=वह हुआ था,
लृट् वेत्स्यते=वह होगा, लोट् विद्यताम्=वह होवे,
लङ् अविद्यत=वह हुआ, लुङ् अवित्त=वह हुआ था,

दिवादि गणी जन् धातु=होना,

लट् जायते=वह होता है. लिट् जज्ञे=वह हुआ था,
लृट् जनिष्यते=वह होगा. लोट् जायताम्=वह होवे,
लङ् अजायत=वह हुआ. लृङ् अजनि=वह हुआ था.

अजनि का वैकल्पिक रूप अजनिष्ट भी होता है।

लिट्लकार			लुङ्लकार		
जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे.	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
जज्ञसे	जज्ञाथे	जज्ञध्वे.	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
जज्ञे	जज्ञवहे	जज्ञमहे.	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. आर्यः सारम् आदत्ते। २. एकम्पुस्तक त्वम् आदत्स्व। ३. ते मदीयं निषेधं नो मंस्यन्ते। ४. द्वयोः एव वस्तुनोः आवश्यकता विद्यते। ५. नत्वा तृणायमन्ये। ६. बुधः विवाहस्य बलिं नो आदत्ते। ७. भवन्तः कदा शयिष्यन्ते। ८. भावनाः द्वादशधा जायन्ते। ९. विजयायाः सूनुः अजनि।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. उसका चरित्र दूषित हो गया (अजायत)। २. कार्य उद्यम से ही होते हैं (जायन्ते। ३. धर्म दश प्रकार (दशधा) होते हैं। ४. बालक पुस्तक को लेता है (आदत्त)। ५. मैं सोता हूं तुम भी सोओ। ६. वह अभी पाठ लेता है (आदत्ते)। ७. वे मेरी बात को नहीं मानते थे। ८. शाला कहाँ है। ९. हम क्या करें, आप सदा सोते हैं, मैं वहाँ नहीं सोता था।

Scanned by CamScanner

षोडशः पाठः

स्त्री-लिंग, महिला-वर्ग

अनुजा=छोटी बहिन, अम्बा=माता, आत्मजा=पुत्री, उपाम्बिका=धाय, ऋतुमती=रजस्वला, कन्या=लड़की, कान्ता=स्त्री, कुमारी=कुँवारी, जननी=माता, ज्येष्ठा=जिठानी या जेठी बहिन, दासी=दासी, दुर्भगा=विधवा, दुहित्री=पुत्री, देवरजाया=देवरानी, धात्री धाय।

नप्त्री=नातिन, नारी=स्त्री, पतिव्रता=सतीपत्नी=स्त्री, पाचिका=रसोयन, पितामही=आजी, दादी, पितृव्या=काकी या चाची, पुत्री=लड़की, पौत्री=नातिन, प्रजावती=भाभी, प्रतिवनिता=सौत, प्रपितामही=पराजी, प्रपौत्री=पंतिन, प्रमातामही=नानी की मां, भगिनी=बहिन, भार्या=स्त्री। भृत्या=नौकरानी, भ्रातृजाया=भाभी, भातृव्या=भतीजी, महिषी=पटरानी, मा=माता, मातामही=नानी, मातुली=मामी, वयस्या=सखी, विधवा विश्वस्ता=विधवा, राज्ञी=रानी, सखी=सखी, सहोदरी=सगी बहिन, सुता=पुत्री, सुभगा=सौभाग्यवती, स्नुषा=पुत्रवधू स्याला=साली, स्याली=साराज।

स्त्रीलिंग पशुपक्षिवर्ग

अजा=बकरी, अश्वा=घोड़ी, उष्ट्री=उटनी, करिणी=हथिनी, काकी=कागली, कुक्कुरी कूकरी, कोकिला=कोयल, गर्दभी=गधी, चटिका=चिड़िया, धेनुः=गाय, नकुली=नेवली, पल्ली=छपकली, मयूरी=मोरिनी, महिषी=भैंस, मार्जारी=बिल्ली, मृगी=हरिणी, रासभी=गधी, वत्सी=

Scanned by CamScanner

बछड़ी, वानरी = बन्दरी, बिडाली = बिल्ली, व्याघ्री = तेंदुनी, शृगाली = श्यालिनी, सर्पिणी = सर्पिणी, सिंही = शेरनी, सूकरी सूकरी, हंसी = हँसिनी।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अस्यै कन्यायै पुस्तकं यच्छामि। २. ऋतुमत्याः स्पर्शः नो विधेयः। ३. कलायाः मातामही विदित्वा मृता। ४. कोकिलानां ध्वनिः मधुरः जायते। ५. गणेशस्य अम्बायाः ख्यातिः विद्यते। ६. गर्दभी बहुभिः पुत्रैः सह भारं वहति। ७. तदीया प्रजावती अश्लीलं वदति। ८. दुर्भगायाः सौन्दर्यं नश्यति। ९. धात्रीं पृच्छामि। १०. नार्या पतिः त्यक्तः। ११. पितामह्यै नमः। १२. भर्ता भार्यायै कुप्यति स्म। १३. मामकीनायाः सहोदर्याः सुतः जातः। १४. शालायां कति कुमार्यः विद्यन्ते। १५. सुतः जनन्याः समीपं गतः। १६. स्वकीयां भगिनीं पृष्ट्वा आगच्छामि। १७. हे अम्ब माम् रक्ष।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. अभी लड़की के (सुतायाः) विवाह की चिन्ता है। २. अशोक की बहिन के आज लड़की हुई। ३. उस रानी के सुन्दर पुत्र हुआ। ४. गाय का (धेनोः) दूध अच्छा होता है। ५. नानी को भृत्या नमस्कार करती है। ६. माता से (अम्बाम्) पूछकर आता हूं। ७. मामी पढ़ाकर जाती थी। ८. मा से (अम्बायै) निवेदन करता हूं। मेरी पुत्री मुझको देती है : १०. यहाँ मयूरियाँ नाचती हैं। ११. वानर वानरी से नाराज होता था। १२. सती ने पति की पूजा की। १३. सास पुत्रवधू से (स्नुषायै) नाराज होती है। १४. स्त्री की (कान्तायाः) कान्ति में कलंक नहीं है १५. हरिणी भय से दौड़ती है।

———

Scanned by CamScanner

सप्तदशः पाठः

शरीर वर्ग

कायः देहः शरीरम् = शरीर, इन्द्रियम् = इन्द्रिय, त्वचा = चमड़ा, कचः केशः वालः = बाल, कबरी शिखा = चोटी, जटा = जटा, सीमन्तः = मांग, शिखा = कलगी, शीर्षम् = शिर, मस्तकम् = मस्तक, कपालः = खोपड़ी, श्रोत्रं कर्णः = कान, विषाणः = सींग, ललाटम् = ललाट, भ्रकुटिः = भौंह, कनीनिका = पुतली, लोचनं नेत्रं नयनम् = आँख, दूषिका = कीचर, नासिका = नाक, शिङ्घाणः = नाक का मैल।

नासिकाच्छिद्रम् = नकुवा, श्मश्रु = मूंछ, रसना जिह्वा = जीभ, दन्तः दशनः = दाँत, दन्तवेष्टः = मसूड़ा, तालु = तलुवा, ओष्ठः = ऊपरी ओंठ, अधरः = नीचे का ओंठ, वदनं मुखम आननम = मुँह, चञ्चुः = चोंच, कपोलः गल्लः = गाल, चिबुकम चबुवा, कूर्चकम् = डाढ़ी, कण्ठः गलः = गला, ग्रीवा = गर्दन, अंसः स्कन्धः = कन्धा, करः पाणिः = हाथ, कफोणिः = टिहुनी, मणिबन्धः प्रकोष्ठः = कलाई।

अंगुलिः = अँगुलि, अंगुष्ठः; तर्जनी; मध्यमा, अनामिका कनिष्ठा = क्रमशः अंगूठा आदि पांचों अंगुलियां, पञ्चाङ्गुलम् = पंजा, मुष्टिका = मुट्ठी, बाहुः भुजः = बाहु, चुलुकः = चुल्लू, स्तनः = स्तन, वक्षस्थलम् = छाती, चित्तम् = मन, बुक्कम् = कलेजा, फुप्फसम् = फेंफड़ा, पृष्ठम् = पीठ, पार्श्वम् = पसली, नाभिः = टुड़ी, उदरः जठरः = पेट, तुन्दम् = तोंद, अंकः = गोद, अन्त्रम् = आँत, कटी कटिः = कमर, पक्षः = पंख।

पुच्छ, लाङ्गूलम् = पूछ, शिश्नः = लिंग, योनिः =

Scanned by CamScanner

योनि, कुक्षिः = कूंख, गर्भाशयः = गर्भाशय, वृषणः = अंडकोष, नितम्बः = चूतड़, गुदः = गुदा, चरणः पादः = पैर, जंघा = जांघ, पिण्डिका = पिंडरी, जानु उरु = जांघ, घुटिका = घुटना, खुरः = खुर, पार्ष्णिः = ऐड़ी, माषः = मसा, नखः = नख ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. उदरस्य अर्थे पातकं कः कुर्यात् । २. कान्तायाः केशेषु यूकाः आसन् । ३. कायः कस्य न वल्लभः । ४. गुरुणा अद्य कर्णौ धृतौ । ५. गुरोः चरणौ वन्दनीयौ भवतः । ६. गुरोः समीपे करेण करताडनं नो विधेयम् । ७. चिन्तया शरीरं शुष्यति । ८. जाता मे शीर्षे व्यथा । ९. तेन बाहुना शत्रुः हतः । १०. देवि तुभ्यं करौ बद्धौ । ११. पंकः हि गगने क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मस्तके । १२. भवता कबरी किम् नो बद्धा । १३. शम्भोः त्रीणि नेत्राणि आसन् । १४. सम्प्रति मुखे षड् दन्ताः भविष्यन्ति । १५. सिंहः पुच्छम् उत्थाय अपश्यत् । १६. स्थानात् हीनाः न शोभन्ते दन्ताः केशाः नखाः नराः ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. उन्होंने मेरा चित्त देखा । २. उसकी नाक से (तः) कीड़े गिरते हैं । ३. ऊँट के गले में बिल्ली बांधी । ४. कर का भूषण दान है ५. केवल पेट (उदरम्) कौन नहीं भरता (बिभर्ति) । ६. बड़ा ललाट चातुर्य को सूचित करता है । ७. बाल्य और वृद्धत्व में दन्त नहीं होते । ८. ब्रह्मा के (स्वयम्भुवः) चार मुख थे । ९. लंकापति की बीस भुजाएं थीं । १०. वर्तमान (अद्यतनाः) बालक भी मांग निकालते हैं (रचयन्ति) । ११. व्यायाम से काय मजबूत होता है । १२. शकुन्तला ने नेत्रों से कमल जीते । १३. स्त्री की (कान्ता या) कूंख से कन्या हुई । १४. हाथ पर हाथ रखकर बैठे हैं ।

Scanned by CamScanner

अष्टादशः पाठः

गृहवर्ग

अंगणम् = आंगन, अट्टः अट्टालिका = अटारी, अन्तर्द्वारम् खिड़की, अवकरः = कूड़ा, आलयः = मकान, इष्टिका = ईंट, कटः = चटाई, कपाटः = किवाड़, काचकोषः = लालटेन, कुञ्चिका = कूंची, कुड्यम् = दीवाल कुशूलः = टंकी या कुठिया कोष्टम् = कोठा, खट्वा = चारपाई, खर्परः = खप्पर, खातिका = खाई, गवाक्ष = झरोखा, गृहेशः = घरमालिक।

गेहम् = मकान, चतुःकाष्ठम् = चौखट, चतुष्कम् = चौक या चौबारा, चन्द्रशाला = घर के ऊपर का कमरा, चन्द्रातपः = चंदोवा, जालिका = जाली, तलम् = फर्श, तलगृहम् = तलघरा, तल्पम् = चारपाई, तोरणद्वारम् = अरगा, दरी = गुफा, दुर्गः = किला, देहली = देरी, दोल = झूला, दीपस्तम्भः = दीवट, दोरकः = डोर या रस्सी, द्वारम = दरवाजा, द्वारयन्त्रम् = ताला, धूमः = धुवां, नागदन्तकम् = खूंटी, नालिका = नाली।

न्यासः = भंडा, पंकः = कीचड़ पटलम् = छप्पर, पादुका = खड़ाऊं, पाषाणः = पत्थर, प्रकोष्ठम् = कोठरी, प्रतोली = गली, प्राकारः = कोट, प्रान्तम् = कोना या छोर, प्रासादः = राजमहल छत या मन्दिर भित्तिः = दीवाल, मञ्चः = चबूतरा मञ्जूषा = पेटी, मत्तवारणम् = छज्जा, मन्दुरा = अस्तबल, मृत्तिका = मिट्टी, लोष्ठम् = पत्थर, वर्तिका, वत्ती वस्त्रधारिणी = अरगनी, वातायनम = झरोखा, विद्युज्ज्योतिः = बिजली की बत्ती।

विद्युद्दीपः = बल्ब, विद्युद्व्यजनम् = बिजली का पंखा, विद्युत्सूत्रम् = बिजली का तार, विभागः = पार्टीशन विष्कम्भः

Scanned by CamScanner

लंगर या बेंड़ा, विष्कम्भिका=चटकनी, शय्या=चारपाई, शिक्यम् = सींका, शृंखला=सांकल, शोधनी=बुहारी, सदनम्=मकान, सिकता=बालु, सुधा=चूना, सोपानम्=सीढ़ी, सौधम्=महल, स्तम्भः=खम्भा, हस्तदीपः=गैस।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. अद्य गृहेशः आगमिष्यति। २. अस्मिन् गेहे कियत्यः इष्टिकाः सन्ति। ३. अस्मिन् प्रकोष्ठे के स्थिताः। ४. खट्वायां मत्कुणाः जाताः। ५. गेहे के के विद्यन्ते। ६. ते माम् तत्कोष्ठम् अनैषुः। ७. नृपस्य अंगणं पञ्चदश मासान् रत्नानि वव्रुः। ८. परितः प्रासादं सेना तिष्ठति। ९. मदीयं भवनं प्रतोल्यां विद्यते। १०. यूयं प्रासादस्य कोष्ठम् अगच्छत ११. रामेण भरताय पादुके दत्ते। १२. वयं द्वितीये अट्टं गमिष्यामः। १३. शोधिन्यां अवकरं निःसारय।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. आप सब अपने घर (सदनम्) जावें। २. इस मकान के खप्पर नये हैं। ३. उस अटारी पर कौन-कौन हैं। ४. क्या धूम से अग्नि का निर्णय होता है। ५. घर में पांच आश्चर्य हुए (बभूवुः)। ६. तुम दोनों राजभवन से आये। ७. प्रासाद के (प्रासादम्) चारों ओर खाई शोभती है। ८. भित्ति पर चित्र शोभते हैं। ९. वह मुझे अपने कोठे पर (कोष्ठम्) ले गया (निनाय)। १०. वहां स्तम्भ पर बहुत नाम (नामधेयानि) लिखे हैं। ११. वे सब दुर्ग को जाते हैं क्या? १२. शय्या पर सोते हो या चढ़ाई पर। १३. सीढ़ियों पर कौन-कौन थे। १४. हम सब राजभवन (प्रासादम्) को जावेंगे। १५. हां वे सब लोष्ठों से मेंढकों को मारते थे।

—·—

Scanned by CamScanner

ऊनविंशः पाठः

वस्त्र वर्ग

अंगरक्षकः=जाकट, अंगरक्षिका=अँगरखा या कुरता, अन्तर्वस्त्रम=साया, अर्धकोटम् वास्कट, अवगुण्ठनम=घूंघट, आस्तरणम् = बिछौना, उत्तरीयकम = पिछौड़ा, उपधानम=तकिया, उष्णीषम पगड़ी, उष्णीषिका=टोपी, और्णम्=ऊनीवस्त्र, कच्छः=कांछ, कञ्चुकम्=पोलका कमीच या कुरता, कञ्चुकी=चोली, कटिबन्धः=कमरबन्द।

कन्था=खिथड़ा या कथरी, कम्बलः=कम्बल, करचेलम्=रूमाल, काण्डपटः=कनात, कार्पासम्=सूती कपड़ा, कुथः=गलीचा, कोटम्=कोट, कौपीनम्=लँगोट, कौशेयम्=रेशमी वस्त्र, गर्दिका=गद्दी, गलबन्धांशुकम्=गलाबन्ध, गात्रमार्जिनी=तौलिया, चण्डातकः=लँहगा, चोलकम्=पोलका।

छत्रम्=छाता, जङ्घात्राणम्=पायजामा, जङ्घावस्त्रम्=जाँघिया, तन्तुः=धागा, तूलः=रुई, तूलिका=रजाई दुकूलम्=पिछौड़ा, द्विपटी=दुपट्टा, धटी=किनारी, निचोलः=बुर्का, निवेशः=तम्बू या डेरा, पताका=ध्वजा या झण्डी, पदपोषः=मोजा, पाञ्चाली=गुड़िया, पादत्राणम्=जूता।

प्रच्छदः=चादर, मशकहरी=मशहरी, मुकुटम्=मौर, यवनिका=परदा, रल्लकः=लोई, वटनम्=बटन, वस्त्रम्=वस्त्र, विष्टरम्=बिछौना, शणः=सन, शणपटः=बोरी, शाटकम्=धोती, शाटिका=साड़ी, शिरस्कम्=टोपी, शिरस्त्राम् साफा, शीर्षण्यम्=टोप, स्यूतः=जेब या पाकेट, हस्तत्राणम्=हथमोस।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

१. इयं बालिका नवां नवां शाटिकां परिधाय आगच्छति। २. बलानाकुमारी कृष्णां वञ्चुकीं वाञ्छति। ३. कौशेये वस्त्रे हिंसा जायते। ४ त्वं तत्र एकम् उपधानं नय। ५. त्वं मदीये आस्तरणे स्वपिहि। ६. नायं: अवगुण्ठनम् उत्थाप्य वधूं पश्यन्ति। ७. पुत्रवधू: यवनिकायां तिष्ठति। ८. मदीयेन मातुलेन पादत्राणं प्रेषितम्। ९. मदीयं शिरस्त्राणं कुत्र विद्यते। १०. मन्दिरं परितः पताकाः भान्ति। ११ यूयं कस्य निवेशे स्थास्यथ। १२. रजकः मलिनान् पटान् निनाय। १३. वध्वाः उत्तरीयं सद्यः आनय। १४. वस्त्रेण प्रभा शतधा वर्धते। १५. विवाहे साम्प्रतं मुकुटस्य उपयोगः विधेयः। १६. शणपटान् सद्यः आनय।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

१. अनेक मनुष्य डेरे में ठहरे। २. अब छात्रों के पास टोपी और धोती नहीं होती। ३. अब विवाह में लँहगा नहीं चलता। ४. ऊनी वस्त्र अपवित्र होता है। ५. कम्बल शीत्य को हरता है। ६. काकी की कमीच का कपड़ा ले जा। ७. चादर (प्रच्छदः) मलिन हो गया। ८. छत्ते का मूल्य अधिक है। ९. दो कुली बोरा ले जावेंगे। १०. धागे में मोती सजाओ। ११ बजाज वस्त्रों को ले जाता है। १२. मशहरी में मच्छर (मशकाः) नहीं काटते हैं (दशन्ति)। १३. यवनी बुरखे में है। रजाई में रुई थोड़ी है। १४. वह किनारी खरीदने गई। वहां साड़ियां प्रसिद्ध हैं। १५. वे उसे पर्दे में ले गये।

— —

विंशः पाठः

अन्न वर्ग

अन्नम्=अनाज, कणः=कण या दाना, कोद्रवः=कोदों, गोधूमः=गेहूँ, चणकः=चना, तण्डुलः=चावल, तिलः=तिली, तुवरः=राहर, धान्यम्=अनाज, नवमुद्गः=मोंठ, प्रियंगुः=बाजरा, मटरः=बटरा, मसूरः=मसूर, माषः=उरदा, मुक्तान्नम्=जुवार, मुद्गः=मूँग, राजिका=राई, शस्यम्=मका, शालिः=धान, श्यामाकः=समा, षाष्ठिकः=सांठी, सस्यम्=धान, सर्षपः=सरसों ।

शाक वर्ग

अजगन्धः=पोदीना, आर्द्रकम=अदरक, आलुकम्=आलू, इक्षुः=गन्ना या ईख, कपित्थः=कैथा, कर्कटिका=ककड़ी, कर्कोटः=ककोरा, कारवेल्लकम्=करेला, कूष्माण्डः=कुम्हड़ा, कोशातकी=तोरई, गृञ्जनम्=गाजर, गोजिह्वा=गांभी, चिचिण्डः=चर्चेंड़ा, चिर्भटिका=खीरा फूट या कचरा, चुक्रम्=खटुवा, टिण्डशः=टीण्डसी, तिन्तडीफलम्=इमली ।

पटोलः=परमल, पलाण्डुः=प्याज, पालङ्की=पालक, पुटम्=फली, पुष्पम्=फूल, बिम्बा=कुंदरू, भाजः=भाजी, मरीचकम्=मिर्च, महाकोशातकी=लौकी, मूलकम्=मूली, रसालः=आम, राजमाषः=बबंटी, रामकोशातकी=भिण्डी, लशुनम्=लहशुन, वस्तुकम्=बथुआ, वार्ताकः=बैंगन, शाकः=साक, शिम्बी=सेम, सूरणम्=सूरण ।

फल वर्ग

अक्षोटः=अखरोट, अङ्कोटः=पिस्ता, अमृतफलम्=नासपाती, अबीजा=किशमिस, आमलकः=आंवला, आम्रः

=आम, आम्रलम्=अमरूद, आसुतम्=अचार, कतकः=निर्मली, कदलीफलम्=केला, करमर्दकम्=करोंदा, कर्मरक्षः=कमरख, कालिन्दम्=तरबूजा, कोशाम्रः=देशी आम, क्रमुकः=सुपारी, क्षीरिणी=खिरनी, क्षुद्रखर्जूरः=पिण्डखजूर, खर्जूरः=खारक, खर्बूजम्=खरबूजा, जम्बीरः=जिमरिया, जम्बूफलम्=जामुन, तिन्दुकम्=तेंदू, तूतः=सहतूत।

दाडिमः=अनार, द्राक्षा=दाख, द्राक्षाफलम्=अंगूर, धात्रीफलम्=आंवला, नारंगः=नारंगी, नारिकेलः=नारियल, निम्बुकम्=नीबू, पनसः=कटहर, पद्माक्षम=कमलगट्टा, प्रियालः=चिरोंजी, फलम्=फल, बदरिकः=बेर, बदामः=बदाम, बहुवारः=लिसोड़ा, राजादनः=खिरनी या अचार, राजाम्रः=कलमी आम, शिशफलम्=सरीफा, श्रीफलम्=बेल, शृंगाटकम्=सिंघाड़ा।

भोजननिर्माण सहायक वस्तुवर्ग

अंगार=अंगार, अंगारिका=अँगीठी, आच्छादनम्=ढक्कन, इन्धनम्=ईंधन, उखा=बटुआ, उलूखलम्=उखली, कटाहः=कड़ाही, करीषम्=कंडा, कलशः=घड़ा, कंसः=कटोरा, कंसी=कटोरी, खर्जः=करछली, खल्लः=खरल, खाद्यविपणिः=राशन दुकान, घरट्टः पेषणी=चक्की।

चमसः=चमचा, चषकः=प्याला, चालनी पल्लोली=चलनी, चीनपात्रम=चिनी का प्याला, चुल्ली=चूल्हा, जलपात्रम्=लोटा, झर्झरा=झरिया, दारु=लकड़ी, दीपशलाका=दियासलाई, निष्तुषा=दाल की चक्की, पाकः=पकाना, पात्रम्=बर्तन, पावकः=अग्नि, पिधानम्=ढक्कन, पेषणयन्त्रम पनचक्की, भाजनम्=बर्तन, भ्राष्ट्रिका=भट्टी या

भाड़, महानसम्=भोजनालय, मुसलम्=मूसल, मृत्तैलचल्ली =स्टोव, रक्षा=राख, लोहपत्रम्=लोहे का तवा, व्यजनम् पंखा, वेल्लनः=बेलन, शम्बः=सान, शरावः=सकोरा, शिलाखण्डः=लोढ़ा, शिलापट्टम्=शिल, शूर्पम्=सूपा, स्थालम्=थाल, स्थाली=थाली या गंजिया।

भक्ष्य वर्ग

अंगारकर्कटी=वाटी, अपूपः=पुआ, अवलेहः=चटनी, आमान्नम्=कच्चा अन्न, उपस्कारः=मसाला, करपट्टिका रोटिका=रोटी, किलाटिका=मावा या खोवा, कुण्डलिका=जलेबी, कुल्माषाः=घुंघरी, कूर्चिका=मलाई, कृशरा=खिचड़ी, क्वथिता=कढ़ी, क्षारम्=खार, घृतम्=घी, चक्रिका =वरफी।

चिपिटः=चूड़ा, चूर्णम्=आटा, तक्रम्=छांछ, तण्डुलः =चांवल, तेमनम्=कढ़ी या शाक, तैलम्=तेल, दधि=दही, दन्तकाष्ठम=दातौन, दाधेयम्=रायता, दालिः=कच्ची दाल, दुग्धम्=दूध, दुग्धसारः=खोवा, नवनीतम्=मक्खन, पर्पटः=पापड़, पर्पटी=पपड़िया, पानकम्=शरवत, पायसम =खीर।

पिष्टिका=पिठी, पूलिका पालिका=फुलका परामटा या पूड़ी, प्रपानकम्=शर्वत, फेनिका=फैनी, भक्तम्=भात, मल्लपूपः=मालपुआ, माषगर्भा=कचौड़ी, मिष्टान्नम=मिठाई, मोदकः=लड्डू, यवागूः=लपसी, रागखाण्डवम=मुरब्बा, लप्सिका=लपसी, लाजाः=लाई, लोप्त्री=लोई, वटकः=बड़ा या वड़ी, वेशनम्=बेसन।

व्याघारः=वघार या छोंक, शर्करा=शक्कर, शर्करापालः=शकरपारा, शष्कुली=पुड़ी, सक्तुः=सत्तू, सन्धानकम्

=अचार, सिता=चीनी, सितापाकः=सीरा, सितोपलः=मिसरी, सिद्धान्नम्=पकवान, सूचिका=विधा, सूपः=पकी दाल, सेविका=सेव, सौरभम्=गरम मसाला, संयावः=हलुआ, स्वल्पाहारः=नास्ता ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अत्र अङ्कोटाः वरं नो मिलन्ति । अंगारिकायां जलं पतितम् । अस्मिन् घटे घृतं नास्ति। आपणिकः दाडिमेभ्यः कदा लिखिष्यति। खर्जूराणाम् आज्ञापत्रं लिखन्तु भवन्तः । गुडः करीषैः भोजनं पक्तुं न्यषेधीत् । चणकान् भोक्तुं निषेधथ । चर्मकाराः शरावैः सुरां अपुः । ते कोशाम्राणां गणनां (गिनती को) कुर्वन्ति । ते पात्रं फलानि धतुं निषेधन्ति । त्वम् आर्द्रकस्य अवलेहम् अकार्षीः । दध्ना ओदनं भुक्त्वा प्रसुप्तः । पुटानां शोधनं कुर्वन्तु भवन्तः । भवन्तः चषकैः पानीयं नो पास्यन्ति किम् । भवन्तो कंसाभ्यां पिबताम । अहं द्वे रोटिके ददतु । मुसलेन मुद्गान् शोधय । यवागूः अपि जीवनं करोति । शाकस्य व्यय भूयः एव लिखतु । सम्प्रति वार्ताकाः अहितं करिष्यन्ति ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

आप सब फलियों का शोधन करें। इस अमरूद में स्वाद नहीं है। उड़द बुद्धि को क्षीण (कृशाम्) करते हैं। उसने आम तोड़कर बड़ा अनर्थ किया। कूंजड़ा कलमी आम नहीं लाता। क्या आपने शरबत नहीं पिया। क्या सुपारियों का विभाग तुम दोनों करते थे। तुम पापड़ कब दोगे। दीपक के पास दियासलाई नहीं है। नौकर दूध लाने को पूछता है। बीस आम और तीस केले हैं। मैं नारियलों की गिनती करता हूं। मैं वहां से थालियां अभी लाता हूं। वह शाक ही खाता है, दाल नहीं। वहां कचोड़ियां प्रसिद्ध हैं। वे दोनों कचौरियों की गिनती करेंगे। वे प्यालों से नहीं पियेंगे। वहां मालपुवा अच्छे होते हैं। शक्कर के लिये वहां लिखें।

Scanned by CamScanner

एकविंशः पाठः

चिकित्सा-परिकरः

आङ्लवैद्यः=डाक्टर, आयुर्वेदः=वैद्यक, आरोग्यम्=निरोगता, औषधम् औषधिः=औषध, उद्वर्तनम्=उबटन, क्वाथः=काढ़ा गदः=रोग, गुटिका=गोली, चिकित्सा=इलाज, चिकित्सका=लेडी डाक्टर, चूर्णम्=चूर्ण, जल-विक्षेपिका=पिचकारी, ज्वरमापकयन्त्रम्=थर्मामीटर, तुला=तराजू, तुलादण्डः=डांड़ी, तुलाफलकम्=पलड़ा, नस्यम्=सूंघनी नाडी=नाडी।

नैरुज्यम्=निरोगता, पथ्यम्=पथ्य, परिचारिका=नर्स, पाकः=पाक, पित्तम्=पित्त, रुग्णः=रोगी, रेचकम्=दस्तावर, रोगः=रोग, लेपनम्=लेप या लिपाई, वटिका=बड़ी, परिचर्या=परिचर्या, वातः=वात, वैद्यः=वैद्य, शकुनम्=शकुन, शवपरीक्षा=पोस्टमार्टम, स्वेदः=पसीना।

रोग वर्ग

अतिसारः=दस्त, अपस्मारः=मिरगी, अर्शः=बवासीर, अरुचिः=अरुचि, उन्मादः=पागलपन, कण्डुः=खाज, कफः=कफ, कासः=खांसी, कुष्ठः=कोढ़, क्षयः=तपेदिक, खर्जूः=खाज, ग्रान्थिकः=प्लेग, छिक्का=छींक, जम्भा=जँभाई, ज्वरः=ज्वर, तापः=गर्मी, तृषा=प्यास, दाहः=दाह

पाण्डुः=पीलिया कामला, प्रदरः=प्रदर, प्रमेहः=प्रमेह, प्लीहः=लीवर, भस्मकः=भस्मक, भ्रमः=उन्माद, मूर्च्छा=मूर्छा, मौक्तिकज्वरः=मोतीझिरा, वमनम्=कै, विपादिका=बिमाई, विसर्पः=विषैला फोड़ा, विसूचिका

Scanned by CamScanner

हैजा. व्रणः घाव, शूलः=शूल, शोथः=सूजन, स्फोटः=फोड़ा, स्वासः=स्वास, हिक्का=हिचकी।

औषधि वर्ग

अहिफेनम्=अफीम, आकाशवल्ली=अमरबेल, एला=इलायची, ऐक्षव=गुड़, कर्पूरम्=कपूर, कस्तूरिका=कस्तूरी किरातिकः=चिरायता, क्षारः=खार, खदिरः=कत्था, खसतिलः=खसखस, गञ्जः=गांजा, गुडः=गुड़, चन्द्रबाला=इलायची, जातीफलम्=जायफल, जीरकम्=जीरा, तमालपत्रम्=तमाखू, ताम्बूलम्=पान, देवकुसुमम्=लवंग, धान्यकम्=धना।

पिप्पली=पीपल, विभीतकः=बहेड़ा, भृंगा=भांग, महेला=बड़ी इलायची, मृगनाभिजा=कस्तूरी, मेथिका=मैथी, यवनिका=अजवाइन, लवंगः=लौंग, लवणः=नमक, लशुनः=लहसुन वराटिका=कौड़ी, वर्णकम्=चूना विजया=भांग, विषम्=जहर, शुण्ठिका=सौंठ, सैन्धवः=सेंधा नमक, हरिद्रा=हल्दी, हरीतकी=हर्र, सतपुष्पा=सोंप।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अरिं विजित्य मूच्छाम् अगमत्। आंग्लवद्ये वैद्ये का कतरः अर्हः विद्यते। इमं भ्रान्तिके मृतं जानहि। कस्तूरिका भक्ष्या नास्ति। गुडेन श्लेष्मः वर्धते। तमालपत्रम् एकं विषं विद्यते। परीक्षातः निर्वृत्य रोगं ज्ञास्यामि। भक्षिते अपि लशुने व्याधिःना शान्तः। यवनिकायाः अशने निम्बः कटुकः नो लगति। लोके ईदृशाः अपि अनेके मानवाः विद्यन्ते यैः 'वैद्यस्य औषधस्य वा दर्शनमपि नो कृतम्। वयं शकुनं नो अज्ञासिष्म। विपादिव्यया विहीनाः परपीडां किं जानन्तु। वैद्यः यमस्य ईश्वरस्य च भ्राता विद्यते। सः चिकित्सां विधिना करोति स्म। सैन्धवः एकः पाषाणः विद्यते।

Scanned by CamScanner

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

अमरबेल के जड़ (मूलम्) नहीं होती। अल्प रोग की उपेक्षा नहीं करना चाहिये। कच्चे चनों के खाने से अरुचक रोग नष्ट हो जाता है। कपूर का सेवन धनिक करते थे। क्षयरोग सब रोगों में बुरा गिना जाता है। जिनको दवा की आवश्यकता नहीं होती वे धन्य हैं। थर्मामीटर से ज्वर का माप (मानम्) होता है। दुनियां में आरोग्य ही उत्तम सुख है। परिचर्या में परिचारिकाएँ निपुण हैं। पागल का विवेक नष्ट हो जाता है। बालकों के प्रति अफीम का उपयोग नहीं करना चाहिये। भांग से मूर्च्छा आती है। मृत्यु तो अच्छी है, परन्तु रोग अच्छा नहीं है। वह हैजा से मरा। वहां से आकर डाक्टर का (आङ्ग्लवैद्यस्य) इलाज कराऊंगा। रोगी की नाड़ी चली गई।

पुस्तकव्यापारिणं प्रति पत्रम्

श्रीमन्तं संस्कृतपुस्तकविक्रेतारं सरलजैनग्रन्थभण्डारजबालिपुराध्यक्षं श्रीमोहनलालशास्त्रिणं प्रति नमस्काराः सन्तु।

श्रीमन्! मम निम्नपुस्तकानामतीवावश्यकता वर्तते। तत् पत्रवाचनानन्तरमेव वी. पी. द्वारा प्रेषणीयानीमानि पुस्तकानि। एतेषां मार्गव्ययसहितं यत् मूल्यं स्यात् तदपि पत्रद्वारा समूचनीयम्।

५०	पञ्चाशत्	सरलसंस्कृतशिक्षाप्रथमभागाः।
२५	पञ्चविंशतिः	सरलसंस्कृतशिक्षाद्वितीयभागाः।
१२	द्वादश	प्रतिष्ठापाठस्य पंचमभागाः।
१२	द्वादश	जैनसिद्धान्त – मुक्तावल्यः।

विनीता

विद्यावती जैन, काव्यतीर्थ, एम. ए.

म. नं. ३४६ गांधीगंज,

जबलपुर म. प्र.।

द्वाविंशः पाठः

शिक्षा वर्ग

अध्यापकः=मास्टर या अध्यापक, अंक=नम्बर अंक, अनुपस्थितिः = गैरहाजिरी, अनुशासनम = आज्ञाकारित्व, अवकाशः=छुट्टी, आचार्यः=प्रिंसपल, उत्तरम्=उत्तर, उत्तीर्ण =पास, उपस्थितः=हाजिर, उपस्थितिः=हाजिरी, उपायनम्=भेंट, कक्षा=क्लास, कन्दुकः=गेंद, कलहः=झगड़ा, कलाविद्यालयः=आर्टकालेज, क्रीडाक्षेत्रम्=खेल स्थान, कुलपतिः=चांसलर, कृष्णकाष्ठफलकम्=ब्लैकबोर्ड काला तख्ता, खेलः=खेल, गदिका=गद्दा या गदिया।

गुणनम्=गुणा, गृहपतिः=सुपरिन्टेंडेन्ट, ग्रन्थः=पुस्तक, घटिका घटीयन्त्रम्=घड़ी, घण्टिका=घण्टी, घाण्टिकः=घण्टी बजाने वाला, चतुष्पादिका=चौकी या टेबिल, छात्रः=विद्यार्थी, तिथिपत्रम्=तिथिदर्पण या कलैण्डर त्रिपादिका=तिपाई, त्रैराशिकम्=त्रैराशिक, दण्डः=सजा, धारालेखनी = फाउन्टेन्पेन, नियुक्तिपत्रम् = नियुक्तिपत्र, निरीक्षकः=इन्सपेक्टर, पट्टकम्=पटिया या बोर्ड, पाठन-क्रमः=पढ़ाई का ढंग, पट्टशिष्यः=मानीटर, परामर्शः=पाठ चिन्तन, पाठकः=मास्टर या अध्यापक पाठनम्=पढ़ाई पाषाणपट्टिका=स्लेट।

परिणामः=फल, पाठकः=अध्यापक, पारितोषिकम्=इनाम, परीक्षा=इम्तहान, पीठः=स्टूल, पुस्तकम्=पुस्तक, पुरस्कारः=इनाम पृष्ठम्=पेज, प्रधानाध्यापक=मुख्याध्यापक प्रबंधकर्ता=मैनेजर, प्रश्नः=प्रश्न, दीपः=दीपक, प्राध्यापकः=

Scanned by CamScanner

प्रोफेसर, बीजगणितम्=एलजबरा, मठः=छात्रावास, महाविद्यालयः=कालेज, मसी=स्याही, मसीपात्रं मेलानन्दः=दावात, मानदण्ड=स्केल, मञ्जूषा=पेटी, रेखादण्डः=रूल।

लिपि=कापी, लेखः=लिखना, लेखनी=लेखनी या कलम, वर्तिका=पेन्सल, वाटिका=बगीचा, विनय=नम्रता, विश्वविद्यालयः=यूनिवर्सिटी, वेतनम्=वेतन, वेत्रासनम्=कुर्सी, व्यकलनम्=बाकी, व्यवहार=बर्ताव, व्यायामः=कसरत, शिक्षा=पढ़ाई, शिक्षकः=मास्टर, शिष्यः=विद्यार्थी, शोषणपत्रम्=स्याहीसोख, समयविभागः=समयविभाग, संकलनम्=जोड़, संडासिका=टट्टीघर, सुलेखः=सुन्दरलेख।

कर्मवाच्य के नियम

प्रयोगे कर्मवाच्यस्य, तृतीया स्यात्तु कर्तरि।
कर्मणि प्रथमा चैव, क्रियां कर्मानुसारिणी॥

कर्मवाच्य में कर्ता की विभक्ति तृतीया और कर्म की प्रथमा होती है। क्रिया कर्म के अनुसार होती है। अर्थात् कर्म का जो पुरुष तथा वचन होता है, क्रिया के तिङन्त में होने पर वही पुरुष और वही वचन होता है। इसी प्रकार कृदन्त क्रियापद के लिंग, विभक्ति और वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे तिङन्त में देवदत्तेन पुस्तकानि लिख्यन्ते। यद्यपि यहां कर्ता (देवदत्त) एक वचन का है, तथापि कर्म (पुस्तक) बहुवचन का है इसलिए क्रिया में बहुवचन हुआ है। कृदन्त में जैसे—तेन समुद्राः दृष्टाः।

भाववाच्य के नियम

कर्माभावः सदा भावे, तृतीया चैव कर्तरि।
प्रथमः पुरुषश्चैक-वचनश्च क्रियापदे॥

भाववाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म नहीं

Scanned by CamScanner

होता। क्रिया सदा प्रथमपुरुष की एकवचनान्त ही होती है। जैसे—वयं तिष्ठामः, अस्माभिः स्थीयते। इसी सरह—यूयं विद्वांसः भवत। युष्माभिः विद्वद्भिः भूयताम्। इत्यादि।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अस्य इतिहासः एव नो मिलति। अस्य योग्यता कीदृशी अस्ति। अस्यां वाटिकायां मानवाः भ्रमन्ति। आवां पुस्तकं श्रित्वा लिखिष्यावः। ऋते शिक्षां कुतः सुखम्। कन्दुकक्रीडा कुत्र वर्तते। पट्टशिष्यः किं भाषते। पठितः पाठः प्रातः स्मर्तव्यः। पाणपट्टिकां सद्यः लप्स्यसे। बिना विद्यां कुतः कीर्तिः। भवता पठनक्रमः किं नो दृष्टः। यत्र अनुशासनं नास्ति, तत्र शान्तिः पदं न दधाति। शिक्षिकाः वेतनम् ईहन्ते। शिक्षको प्रधानाध्यापकं वन्देते। युवां लेखिन्या लेखनाय कल्पेथे। हट्टे कर्गलानाम् अभावः जातः।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

अब छात्र अध्यापकोंको नौकर मानते हैं। आजकल पढ़ाई पांच मास होती है और छुट्टी सात मास। इन्स्पेक्टर महोदय क्या देखते हैं। इस समय छात्र प्रायः नकल कर पास होते हैं। इस समय वास्तव में न तो छात्र पढ़ते हैं और न पाठक पढ़ाते हैं। इस समय शिक्षालयों में छुट्टियों का आधिक्य है। जिस शिक्षा से योग्यता नहीं आती, ऐसी शिक्षा को धिक्कार हो। तुम्हारा नियुक्तिपत्र नहीं मिला। तू परीक्षा में पास नहीं हुआ। दातात में स्याही नहीं है। नया पठन-क्रम कहाँ है। निरीक्षकों ने एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं पाया। पांच दिन की छुट्टी होना शक्य नहीं। फाउण्टेनपेन से अक्षर अच्छे नहीं आते। वे सब क्रीडाक्षेत्र में खेलते हैं। सभ्य छात्र शिक्षक को नमस्कार करते हैं। सुपरिन्टेन्डेण्ट का वर्तन अच्छा नहीं है।

Scanned by CamScanner

त्रयोविंशः पाठः

सभा वर्ग

अधिवेशनम् = अधिवेशन, अध्यक्षः = सभापति, अनुमोदनम = पुष्टि, उच्चचतुष्पादिका = टेबिल मेज, उत्तरच्छदः = चादर, उपकार्या = मण्डप, उपाख्यानम् = कथा, ऊहापोहः = तर्कवितर्क, कथकः = वक्ता, करतलध्वनिः = ताली, कवितापाठः = कविता पढ़ना, कार्यक्रमः = प्रोग्राम, कार्यकारिणी = कार्य करने वाली कमेटी, कार्यवाही = हुआ कार्य, काव्यम् = कविता ।

खण्डनम् = खण्डन या प्रतिवाद, धन्यवादः = धन्यवाद, नगरसभा = म्युनिसपालटी, नियमः = नियम, निर्वाचनम = चुनाव, पक्षः = पक्ष, पदं पदवी = पद या उपाधि, परिवर्तनम = उलटफेर, प्रत्याख्यानम = निषेध, प्रपंचः = विस्तार, प्रतिवादः = खण्डन या प्रतिवाद, प्रवेशः = प्रवेश, प्रवेशपत्रम् = प्रवेशपत्र, प्रवेशशुल्कः = प्रवेश फीस, प्रस्तावः = प्रस्ताव ।

प्रहेलिका = पहेली, बहिष्कारः = बहिष्कार, भंगः = समाप्ति, भव्यासनम् = कुरसी या गद्दी, भाषणम् = भाषण, मंगलाचरणम् = मंगलाचरण, मतम् = वोट, मन्त्रित्वम् = मन्त्रीपन, महामात्यः = प्रधानमन्त्री, योजना = स्कीम, राष्ट्रियमहासभा = कांग्रेस, रोधनम् = रोकना, लेखः = लेख, वर्ष ग्रन्थिः = वर्षगांठ, वादविवादः = वाद विवाद, वितरणम् = वितरण, विवरणम् = रिपोर्ट, विसर्जनम् = समाप्ति, विषयः = विषय ।

विषयनिर्धारिणी = प्रस्तावनिश्चायिका या सब्जेक्ट कमेटी, व्याख्यानम् = व्याख्यान, शासनम् = आदेश, संगरः = प्रतिज्ञा, सचिवः = मन्त्री, सदस्यः = सभासद्, सभा = परिद्प सभा, सम्मेलनम् = अधिवेशन या बैठक, सभाभवनम् = सभास्थान, समर्थनम् = उचित बताना, समितिः = कमेटी एशोसिये-

Scanned by CamScanner

शन, साचिव्यम् = मन्त्रीपन, स्थगितम् = रोक देना, स्वीकृतिः = मंजूरी, हस्ताक्षरम् = सही ।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अत्र वर्षे राष्ट्रियमहासभायाः अधिवेशनं कुत्र भविष्यति । अध्यक्षेण समितेः कार्यवाही स्थगिता । अनयोःप्रस्तावयोः अस्माकं विवादः विद्यते । अमुम् ऊहापोहं सदस्याः उचितं नो मन्यन्ते । इयं तिसृणां स्त्रीणां सभा विद्यते । कर्मठाः छात्राः परीक्षायां पारितोषिकं लभन्ते । न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः । प्रस्तावे परिवर्तनं यूयमुचितं मन्यध्वे ? भवदीयायाः सभायाः के के नियमाः विद्यन्ते । भवन्तः कस्य प्रहेलिकां वरं मन्यन्ते । भाषणे बहुः प्रपञ्चः नोचितः । भो भो मानवाः अलं विवादेन । महामात्यः कुत्र गतः ? यूयं मदीयं साचिव्यं वेत्स्यध्वे । सः मदीयां स्वीकृतिं नो ददाति । साम्प्रतं कवितापाठः भवितव्यः ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

अब उपाधियों का वितरण होगा । अब नवीन योजना का निर्माण होगा । आज महावीर की वर्षगांठ का दिन है । इस समय कांग्रेस का बोलबाला है । उसकी उपाधि को सब लोग नहीं मानते हैं । उसके बहिष्कार का प्रस्ताव हुआ । उसे हजार वोट अधिक मिले । कुछ धूर्त सदस्य सचिव की आज्ञा नहीं मानते थे । म्युनिसपालटी का चुनाव कब होगा । यह सभा चार स्त्रियों की है । वहां उसके बहिष्कार का प्रस्ताव हुआ । व्याख्यान की समाप्ति में करतलध्वनि होती है । सभा के नियमों को वे नहीं मानते हैं । सभापति के बिना बैठक की कार्यवाही स्थगित हो गई । सभाभवन में अध्यक्ष का प्रवेश हुआ । सभा में आज्ञा के बिना प्रवेश निषिद्ध है (निषिद्धः) । समिति का परिवर्तन हमें स्वीकार है ।

Scanned by CamScanner

चतुर्विंशः पाठः

न्याय वर्ग

अधमर्णः=कर्जदार, अधिकारः=अधिकार या दखल, अन्यायः=जुर्म, अपघातः=एक्सीडेंट, अपराधः=दोष, अभियोगः=नालिस यामुकद्दमा, अर्थदंडः=जर्माना, आज्ञा=हुक्म या आदेश, आवेदनपत्रम्=अर्जी, आह्वानम्=पुकार, उत्कोचः उपदा=घूस या रिश्वत, उत्तमर्णः=साहूकार, ऊहः=बहस या दलील, ऋणम्=ऋण या कर्ज, करः=टैक्स, कारावासः=कैद, कार्यालयः=दफ्तर, कुसीदम्=ब्याज, कोटपालः=कोतवाल, कोषः=खजाना।

कोषाध्यक्षः=खजांची, चरमपत्रम्=वसीयतनामा, तर्कः=बहस या दलील, तार्किकता=वकालत, देशनिर्यातनम्=देशनिकाला, द्वारपालः=द्वारपाल, नयः न्यायः=न्याय, न्यायालयः=कोर्ट, न्यायलेखकः=मुन्शी, न्यायशुल्कम्=कोर्टफीस, न्यायाधीशः=मजिस्ट्रेट, पुनर्निवेदनम्=अपील, प्रतिभाव्यम्=जमानत, प्रतिभूः=जामिनदार, प्रतिवादी=मुद्दालय, प्रतीहारः=द्वारपाल, प्रमाणम्=सबूत, प्रवेशकारः=पेशकार, प्राड्विवाकः=वकील, प्रान्तपतिः=गवर्नर।

वादी=मुद्दई, भाण्डागारः=खजाना, भारतशासकः=गवर्नर जनरल, भाषापदः=अर्जीदावा, मण्डलाधिकारी=कमिश्नर, मण्डलाधीशः=कलेक्टर, मूलधनम्=असल रकम, मृत्युदण्डः=फांसी, रक्षापुरुषः=सिपाही, राजद्वारम्=कचहरी या कोर्ट, राजनियमः=कानून, लंचा=लांच रिश्वत, बंदी=कैदी, वरिष्टवावकीलः=बैरिस्टर, वावकीलः=वकील, विचयः

Scanned by CamScanner

=उत्ताम, विधानम्=कानून या नियम, शूला=शूली, साक्षी =गवाही, साक्ष्यम्=गवाही, धृतः=कैदी।

नोट—मण्डलाधिकारिन्, बन्दिन् और साक्षिन् शब्द के रूप धनिन् शब्द के समान और प्रतिभू शब्द के रूप स्वयम्भूशब्द के समान होते हैं। जो अपने पाठक से समझना।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अद्यप्रभृतिः प्राड्विवाकः प्रविष्टः। अस्मिन् साक्ष्यस्य आवश्यकता नो विद्यते। उत्तमर्णः कुसीदं नो आदत्ते। ऋणं कृत्वा न भेतव्यम्। ऋणं प्रथमं मम विलम्बम्। किम् अद्यप्रभृतिः प्राड्विवाकः प्रविष्टः। कोषाध्यक्षः भाण्डागारे प्रविष्टः। नृपाय सद्यः करं देहि। प्रतिवादस्य विधानानि कानि वर्तन्ते। प्रतिभूः किं करोति ते। भारतस्य नवं (नया) विधानं निर्मितम्। मम प्रतिवासे (पड़ोस में) तस्य कार्यालयः विद्यते। मित्रेण सार्धम् अधुना एव जगाम। रक्षापुरुषाः कदा आगमिष्यन्ति। राजनियमा एवमेव वर्तिष्यन्ते। सः मदीयं साक्ष्यं नो ददाति। साक्ष्यं के के दास्यन्ति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

अदालत जमानत नहीं लेती। अब नये टैक्स लगेंगे। अभी गवाह नहीं देना चाहिये। कर्जदार सबूत कब देगा। किसी की जमानत देना उचित नहीं। खजांची कोर्टफ़ीस नहीं लेता है। देश निकाला फांसी से बुरा है। द्वारपाल ने पूछकर बुलाया। न्यायाधीश ने फांसी दी। वकील ने अभी वकालतनामा नहीं लिखा। मजिस्ट्रेट का वह न्याय नहीं था। मैंने कोर्ट में अर्जी दी थी। मूर्ख वकील कचहरी में रोते हैं। यह तुम सबका अक्षम्य अपराध है। साहूकार से कर्जदार कर्ज लेता है।

Scanned by CamScanner

पञ्चविंश: पाठ:

शस्त्र–वर्ग

अग्निगोलकास्त्रम्—बम, अंकुश:—अंकुश, असि:—तलवार, अस्त्रम—हथियार, कण्टक: कण्टकम—काटा, करपत्रम्—करोत, कर्तरिका—कतरनी, कवच:—कवच, कविका—लगाम, कशा—कोड़ा, कार्मुकम—धनुष, कीलक:—कीला, कीलिका—कीली, कुठार:—कुल्हाड़ा, कुलिश:—वज्र, कृपाण:—तलवार, कौमोदकी—गदा, क्रकच:करोत, क्षुर:—छुरा ।

क्षुरप्र:—खुरपा, क्षुरिका—छुरी, खनित्रम—फावड़ा, खलीकम्—लगाम, गद:—गदा, घन:—हथौड़ा, चक्रम्—चक्र, चाप:—धनुष, छुरिका—छुरी, जालम—जाल, टंक:—टांकी, दण्ड:—डण्डा, दात्रम्—हँसिया, नाथ:—नाथ, नालीकम—बन्दूक, पञ्जर:—पिंजड़ा, परमाण्वग्निचूर्णम्—एटमबम, परशु:—फरसा, भल्ल:—भाला, बाण:—बाण ।

यष्टिका—छड़ी या लाठी, लगुड:—डण्डा, लवित्रम्—चाकू, बडिशम्—मछली का जाल, वृक्षादनी—वसूला, वृश्चन:—रेती, वेत्रम्—बेत, वेधनिका—बरमा, शंकुला—सरौता, शणसूत्रम्—जाल, शतघ्नी—तोप, शर:—बाण, शलाका—सुई, शस्त्रम्—हथियार, शिलीमुख:—बाण, शूल:—त्रिशूल, सुदर्शनम्—सुदर्शन चक्र, सूचा—सूजा, सूचि: सूचिका—सुई ।

वादित्र–वर्ग

आङ्लवादित्रम्—अंग्रेजी बाजा, कांस्यम्—मंजीरा, झल्लरी—झालर, डिण्डिम:—डिंडोरा, ढक्का—नगाड़ा, ताल:—तबला, दुन्दुभि:—तुरई, पटह:—बड़ा नगाड़ा, परिवादिनी—सितार या बीणा, भेरी—तुरई, मुरज:—मृदंग, वादित्र, वाद्यम्—बाजा, बीणा वेणु:—बांसुरी वीणा, शंख:—संख ।

वाहन–वर्ग

काचटिका=कांवर, घोटकः=घोड़ा,जलयानम्=जहाज, द्विचक्रयानं द्विचक्रिका=साइकिल,नरवाहनम्=रिक्सा,नौका=नाव, पुष्पकम्=कुबेर का विमान, पोतः=जहाज, मृत्तरः=मोटर, यानम्=सवारी, रथः=रथ, वाहनम्=सवारी, वाहः=घोड़ा, वाहकः=ठेला, बाष्पनौका=स्टीमर, वाष्पयानम्=रेलविमानम्=विमानवृहद्विचक्रिका=मोटर साइकिल व्योमयानम्=हवाईजहाज,शकटम्=गाड़ी,शिविका=पालकी।

भूषण–वर्ग

अंगुरीयकम्=अँगूठी, अलंकारः आभूषणम्=आभूषण या जेवर, कंकणम्=कड़ा या कंकन, कटकः=कड़ा, कर्णपूरः=कर्णफूल या ऐरन, कण्ठिका=कण्ठी, काचवलयः=कांच की चूड़ी, कुण्डलम्=बाली, केयूरम्=बाजूबन्द, कौतुकम्=मंगलसूत्र, ग्रैवेयम्=तिदाना, हार, नासाभूषणम्=लोंग, कांटा, नूपुरम्=बिछिया, पादकटकः=तोड़र, लच्छा या छागल, वलयः=चूड़ी, भूषणम्=आभूषण या जेवर।

मुकुटम्=मुकुट, मुक्तावली=तिदाना या हार, मुद्रिका=छाप, मेखला=करधौनी,ललाटिका=बेंदा, ललान्तिका=माला लल्लरी या कण्ठी, शिरोरत्नम्=झूला,हारः=तिदाना।

शरीरभूषा वर्ग

आदर्शः=दर्पण, उपनेत्रम्=चश्मा, कंतिका=कंघी, कज्जलम्=काजल, कुंकुमम्=कुंकुम, गण्डूषः=कुल्ला, गान्धिकम्=इत्र, तैलम्=तैल, दन्तकाष्ठम्=दातौन, दन्तशोधिनी=ब्रश, दर्पणः=दर्पण, फेनिलः=साबुन, भूषा=सजावट, मुकुरः=दर्पण, ललाटिका=तिलक, लोमर्माजिनी=ब्रश, वासः=सुगन्ध, विन्दु=विन्दु।

Scanned by CamScanner

शारीरिक-धातूपधातु-वर्ग

अस्थि=हड्डी, आर्तवम्=रज, कीकशम्=हड्डी, पुरीषम्=मल, पूयम्=पीप, मज्जा=हड्डी की चर्बी, मलः=मल, मांसम्=मांस, मूत्रम्=मूत्र, रक्तम्=रक्त, रसः=रस, रुधिरम्=रक्त, लाला=लार, वसा=चर्बी, वीर्यं शुक्रम्=वीर्य।

क्तवत् और मतुप् प्रत्ययान्त शब्द

अनुरागवान्=अनुरागी, आप्तवान=पाने वाला, आशावान्=आशावादी, उक्तवान्=कहनेवाला, कान्तिमान्=कान्ति वाला, कृतवान्=करने वाला, क्षुद्वान्=भूखा, गतवान=जाने वाला, दृष्टवान्=देखने वाला, नीतिमान्=नीतिज्ञ, विद्वान्=विवेकी, शरीरवान्=प्राणी, सन्=होता हुआ।

सन्नन्त के उकरान्त शब्द

चिकीर्षुः=करने का इच्छुक, जिगमिषुः=जाने का इच्छुक, जिगीषुः=जीतने का इच्छुक, जिजीविषुः=जीने का इच्छुक, जिज्ञासुः=जानने का इच्छुक, जिहीर्षुः=हरने का इच्छुक, तितीर्षुः=पार करने का इच्छुक, दित्सुः=दने का इच्छुक, दिदृक्षुः=देखने का इच्छुक।

पिपठिषुः=पढ़ने का इच्छुक, पिपासुः=पीने का इच्छुक, पुपूषुः=पवित्रता का इच्छुक, बुभुक्षुः=खाने का इच्छुक, बुभुत्सुः =भोगने का इच्छुक, मुमुक्षुः=मोक्ष का इच्छुक, मुमूर्षुः=मरने का इच्छुक, लिप्सुः=पाने का इच्छुक।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अशोकः द्विचक्रिकया कुत्र ययौ। आशावान् अस्मि यत् भवन्तः मदीयं कथनं स्वीकरिष्यन्ति। कण्टकं कण्टकेन एव

निःसरति । मुर्वैः यथा शोभा जायते न तथा भूषणैः । जिलीविषकः तव नो यान्तु । तक्षकौ क्रकचेन दारु कृन्ततः । पिपासुः पानीयं (जल को) पातुमिच्छति । मांसेन मलेन वा मलिनं शरीरं मूढः एव कमनीयं मन्यते । रामेण बाणेन हतो बालिः । अयमरीणां जिगीषया जिगमिषकः स्मः । विमानस्य गतिः सर्वेभ्यः तीव्रा जायते । वृद्धत्वे नित्यं मुखतः लाला स्रवति । वेणूनां ध्वनिः प्राकृतवादित्रेभ्यो रम्यः जायते । विधवानां नारीणां भूषणेषु अनुरागः नो जायते । शिवः पञ्चदश वारान् डमरुं ननाद । सम्प्रति बालिकाः दर्पणं कंकतिकां च स्यूते एव दधति । सुरेशः उपनेत्रे अनुरागवान् विद्यते । सूचि-कारतः सूचिकाम् आनय ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

आशावादी (आशावान्) हूँ कि आप मोटर से अवश्य आवेंगे । इन बाजों की आवाज मीठी है । उसके हार का हीरा चमकता है (दीप्यति) । एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं । काजल से स्त्री की शोभा बढ़ जाती है । कस्बा में सुअर की चर्बी का मिश्रण होता है । कभी जहाज को (पोतम्) घोड़े ढोते हैं । काश्मीर में बम गिरे । खजूर के मुकुट का अब उपयोग नहीं होता । चोर ने छुरी से प्रहार किया । तुम साबुन से (फेनिलेन) वस्त्रों को कब धोओगे । बाजार से एक डिब्बी कीलियां (कीलिकाः) लाओ । बांस की छड़ियों में भी नेत्र का आकार होता है । भूखा भूखा (बुभुक्षुः) होकर (सन्) पञ्चोत्कट के घर गया । मैं तेरे पर अनुरागी (अनुरागवान्) हूँ । रिक्शा की सवारी अच्छी नहीं होती । लड़का और लड़की के बालों में अब अन्तर नहीं रहा । विष्णु को वीणा विशेष प्रिय थी । सभी शारीरिक धातुओं में कीट होते हैं ।

षड्विंशः पाठः

नगर वर्ग

अजमीढः=अजमेर, अवन्तिका=उज्जैन, असमः=आसाम, इन्दूरकम्=इन्दौर, इन्द्रप्रस्थः=देहली, उज्जयिनी उज्जैन, कम्बोजः=काबुल, कर्णपुरम्=कानपुर, कान्य कुब्जः=कन्नोज, कालिकत्ता=कलकत्ता, काश्मीरः=काश्मीर, गुर्जरः=गुजरात, गौडीयः बंगाल, ग्रामः=गांव, जनपदम्=जिला।

जाबालिपुरम्=जबलपुर, धारा=धारानगरी, नगरम्, नगरी=शहर, नयपालः=नेपाल, निगमः=गांव, नीलाचलः=जगन्नाथपुरी, पञ्चनदम्=पजाब, पाकस्थानम्=पाकस्थान, पाटलिपुत्रम्=पटना, पुण्यपुरम्=पूना, पुरम्=नगर, प्रयागः इलाहाबाद, प्रान्त=प्रान्त, बंग=बंगाल।

ब्रह्मदेशः=बर्मा, भूपालः=भोपाल, भोटांकः=भूटान, मण्डलम्=जिला, मरुस्थलम्=मारवाड़, महिषासुरपतनम्=मैसूर, मुम्बापुरी=बम्बई, राजस्थानम्=राजपूताना, लक्ष्मणपुरम्=लखनऊ, लवपुरम्=लाहौर, वाराणसी=बनारस, विदर्भः=बरार, विदिशा=भेलसा।

स्थान विशेष वर्ग

अक्षवाटः=अखाड़ा, अलकापुरी=देवों की नगरी, आगारम्=स्थान, इन्धनस्थानम्=टाल, उपहारगृहम्=होटल, औषधालयः=दवाखाना या अस्पताल, कारागृहम्=जेल,

Scanned by CamScanner

कोषालयः=खजाना, गर्भागारम्=कोठरी, गोपुरम्=शहर का प्रधान दरवाजा, चतुष्पथम्=चौहट्टा, चलचित्रपटालयः, छवि-गृहम्=सिनेमाघर। उच्चन्यायालयः=प्रमुख कचहरी।

चिकित्सालयः=दवाखाना या अस्पताल, छात्रालयः=बोर्डिंग, त्रितलम्=तीन तल्ला, द्वितलम्=दोतल्ला, धर्मशाला=धर्मशाला, न्यायस्थानम्=न्याय का स्थान, न्यायालयः=कचहरी या कोर्ट, पत्रालयः=डाकघर, पाकशाला=भोजनालय, पाठशाला=स्कूल या पाठशाला, पानीयशाला=पौसरा या पियाऊ, पुरीषालयः=पाखाना, पुस्तकालयः=लायब्रेरी।

प्रतीक्षालयः=मुसाफिरखाना, वस्तुगृहम्=भण्डार, वस्त्र निर्माणी=पुतलीघर, वाचनालयः=लायब्रेरी, वाटिका=बगीचा, वासः=होटल, विश्रामालयः=आरामगृह, शिविरम्=पड़ाव या छावनी, शुल्कालयः=चुंगीघर, श्मशानम्=श्मशान, श्वसुरालयः=ससुराल, सङ्ग्रहालयः=म्यूजियम, सभागृहम्=सभाभवन, सर्वोच्चन्यायालयः=सुप्रीम कोर्ट।

कर्तृवाच्य प्रयोग के नियम

प्रयोगे कर्तृवाच्यस्य, कर्तरि प्रथमा भवेत्।
द्वितीया कर्मणि तथा, क्रिया कर्तृपदान्विता॥

यदि वाक्य में कर्तृवाच्य प्रयोग हो तो कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त प्रयुक्त होता है। तथा क्रिया के पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं। क्रिया कृदन्त होने पर उसमें विभक्ति, वचन और लिंग कर्ता के अनुसार होते हैं। जैसे—तिङन्त में देवदत्तः पुस्तकं लिखति। और कृदन्त में—सीता मुनिपत्नी दृष्टवती।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अस्य नगरस्य शिक्षा कीदृशी विद्यते । अस्य नगरस्य शुल्कालयः कुत्र विद्यते । इन्द्रप्रस्थम् आर्यावर्तस्य राजधानी विद्यते। एकदा आर्यावर्तः अलकापुरी आसीत् । काश्मीरस्य कामरूपस्य वा कान्तानां सौन्दर्यं प्रसिद्धम् । चलचित्रैः नवायाः सन्ततेः विनाशः (बिगाड़) भूतः । चिकित्सालये परिचारिकाणां स्थितिः वरं नास्ति । धाराणस्याः शाटिकायां कदाचित् एकस्य चत्वारि लगन्ति । वासैः युवकानां चरित्रं मलिनं भूतम् । शिशूनां विनाशस्य द्वे एव कारणे स्तः, वासस्य भोजनं, चलचित्राणां दर्शनम्वा । सम्प्रति शिक्षायाः शिबिराणां गरीयसीं आवश्यकता जाता । सुश्रूषागृहेषु परिचारिकाः किं स्थापिताः ?

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

अनेक प्रान्तों में अनेक परिवर्तन हुए । इलाहाबाद के अमरूद प्रसिद्ध हैं । इस पुस्तक का निर्माण जबलपुर में हुआ । इस प्रान्त के जलवायु कैसे हैं । तुम किस जिले में रहते हो । तुम बनारस कब जाओगे । नयी (नवा) बधू ससुराल में रोती है । पंजाब में गेहूँ अधिक होते हैं । पाकस्थान की स्थिति ठीक नहीं । वाचनालय प्रतिग्राम में होना चाहिये । शिक्षित महिलाएँ बनारस की साड़ी का उपयोग नहीं करतीं । सिनेमा और होटल ने आर्यावर्त का विनाश किया ।

Scanned by CamScanner

सप्तविंशः पाठः

राजकीय मुद्रावर्ग

कर्गलमुद्रा=नोट, कुडवः=एक पाव, चतुरणकम्=चुवन्नी, ताम्रकर्षम्=पैसा, द्रोणः=सोलह सेर, घटः=तराजू, नाणकम्=सिक्का, नाराची=कांटा।

निष्क्रयः=मूल्य, पणः=पैसा, पणदशकम्=दश पैसा, पणद्वयम्=दो पैसा, पणत्रयम्=तीन पैसा, पणपञ्चकम्=पाँच पैसा, प्रस्थः=सेर, प्रस्थपञ्चकम्=पंसेरी, मणम्=मन, मानम्=माप, मानदण्डः=नापने का गज, मासः=मासा, रजतमुद्रा=रुपया, रक्तिका=रत्ती, रूप्यकम्=रुपया, रूप्यकार्धम्=अठन्नी, शरावः=आध सेर, सुवर्णमुद्रा=मुहुर।

धातुओं के नाम

कनकं काञ्चनम्=सुवर्ण, काचः=कांच, कांस्यम्=कांसा, किट्टिः=कीट, गैरिकः=गेरू, चुम्बकः=चुम्बक, जशदम्=शीशा, टङ्कणः=सुहाग, ताम्रम्=तांबा, पित्तलम्=पीतल, प्रवालः=मूंगा, मणिः मुक्ता मौक्तिकम्=मोती, रंगम्=रांगा, रजतम्=चांदी, रत्नम्=रत्न, लोहः=लोहा, सिन्दूरः=सिन्दूर, सीसम्=शीशा, स्फटिका=फिटकरी, हीरकः=हीरा।

स्टेशन और पोस्ट-वर्ग

अणुवीक्षणयन्त्रम्=खुर्दवीन, आशूक्तियन्त्रम्=टेलीफोन, चिटिका=टिकट, चिटिकालयः=टिकिटघर, चिटिकानिरीक्षकः=टिकिटचेकर, दूरदर्शकयन्त्रम्=दूरवीन, द्रव्यादेशः=मनीआर्डर, धूमशकटम्=रेल, धूम्रशकटनिरीक्षकः=गार्ड, ध्वनिविक्षेपणयन्त्रम्=रेडियो या लाउड स्पीकर, पत्रम्=पत्र,

Scanned by CamScanner

पत्रमञ्जूषा=लेटरबक्स, पत्रालयपोटलिका=पारसल, पत्री=पत्र, अड्डः=स्टेशन, अड्डाधिपतिः=स्टेशनमास्टर, विद्युत्पत्रम्=टेलीग्राम, रक्षीकृतम्=रजिस्टर्ड, संकेतः=पता।

मुद्रणालय वर्ग

अनुवादः=अनुवाद, अक्षरम्=टाइप या अक्षर, करयन्त्रम्=हाथ का प्रेस, कर्गलम्=कागज, कर्तनम्=काटना, टीकाकारः=अनुवादक, पृष्ठम्=पेज, प्रकाशकः=छपाने वाला, प्रकाशनम्=छपाना, वङ्कनम्=मोड़ना, मसीकारकः=बेलन, मुद्रकः=छापने वाला, मुद्रणम्=छापना, मुद्रणयन्त्रम्=छपाई की मशीन, मुद्रणालयः=छापाखाना, वर्णयोजकः=कम्पोजीटर, लेखकः=रचयिता, समाचारपत्रम्=अखबार, सम्पादकः=सम्पादक, सूचीकर्म=सिलाई, संशोधकः=प्रूफरीडर।

विभक्ति ज्ञान के उपाय

भवेद्विभक्तिः प्रथमा, कर्तृवाच्यस्य कर्तरि।
सम्बुद्धौ नाममात्रे च, कर्मवाच्यस्य कर्मणि ॥ १ ॥
क्वचिद्-अव्यय-योगे च, प्रथमा कथ्यते बुधैः।
कर्तृवाच्य-प्रयोगे तु, द्वितीया कर्मकारके ॥ २ ॥
धिक्प्रती-त्यादि-योगे, क्रियायाश्च विशेषणे।
ऋते विनादिभिर्योगे, द्वितीया सम्मता सताम् ॥ ३ ॥
तृतीया करणे चैव, कर्मवाच्यस्य कर्तरि।
सहार्थैश्च तथा हेतोः, प्रकृत्यादिभ्य एव च ॥ ४ ॥
ऊनार्थैः वारणार्थैश्च, सदृशार्थैस्तथैव च।
अंगतो विकृतिः येन, तृतीया स्यात् तदंगतः ॥ ५ ॥
सम्प्रदाने चतुर्थी स्यात्, तादर्थ्ये च क्रियायुते।
रुच्यर्थानां प्रीयमाणे, नमोयोगे च सा भवेत् ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

अपादाने त्ववयें च, योगे पूर्वादिभिस्तथा ।
उत्कर्षे पञ्चमी ज्ञेया, हेत्वर्थे तु विभाषया ॥ ७ ॥
ऋते बिनादिभि योंगे, पञ्चमी च स्मृता बुधैः ।
षष्ठी भवति सम्बन्धे, कृदन्ते कर्तृकर्मणोः ॥ ८ ॥
तृतीया स्यात् तथा षष्ठी, कृत्यानां कर्तृकारके।
तुल्यार्थयोगे षष्ठी स्यात्, तृतीया च विभाषया॥ ९ ॥
आधारे च तथा भावे, विभक्तिः सप्तमी भवेत् ।
अनादरे च निर्धारे, षष्ठी स्यात्सप्तमी तथा ॥ १० ॥

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

अधुना मुद्रणालयस्य व्यवसायः प्रमुखः (उत्तमः) मन्यते । अस्मिन् मञ्चे प्रतीक्षालयः नास्ति । अस्य पुस्तकस्य लेखकः कः विद्यते । इदं सचित्रं चतुर्भिः आणकैः क्रीतम् । चुम्बकस्य बलेन मंदिरे उल्का न पतिता । दीनानां कनकस्य दर्शनमेव नो जायते किन्तु चणिकाः तत् खादन्ति । भिक्षुः पणं याचते । मुद्रासु महत् परिवर्तनं जातम् । कम्पकं किं न वर्तते । विद्युत्पत्रं कुतः समायातम् । व्रणस्य रुधिरं स्फटिकया शुष्यति । सीता स्त्रीषु रत्नमासीत् ।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

आज ससुराल से पत्र आया । इस तराजू में कुछ अन्तर है । इस स्टेशन पर रेल रात को आती है । उस गाँव में डाकघर नहीं था । उस स्टेशन पर होटल नहीं था । दश रुपये से क्या होता है । पुस्तकों का प्रकाशन जबलपुर से अधिक होता है । मुहर सर्वोत्तम सिक्का है । मेरा मनीआर्डर आज तक नहीं आया । यह पुस्तक चार आने की है । यहाँ पुस्तकों का मुद्रण अच्छा होता है । सोने से रत्न का मूल्य अधिक होता है ।

ग्रन्थ-समाप्तिः

मुद्रक—श्रीराम प्रिंटिंग प्रेस, जवाहरगंज, जबलपुर ।

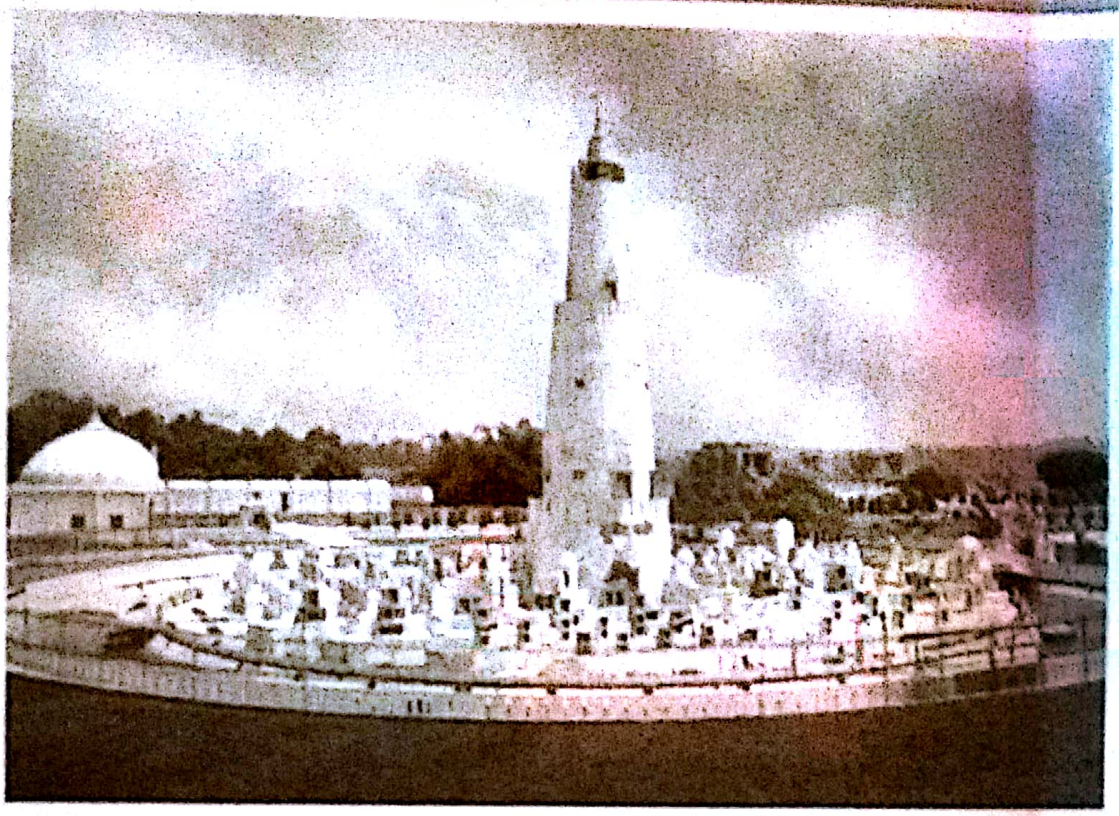

भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में निर्मित
विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

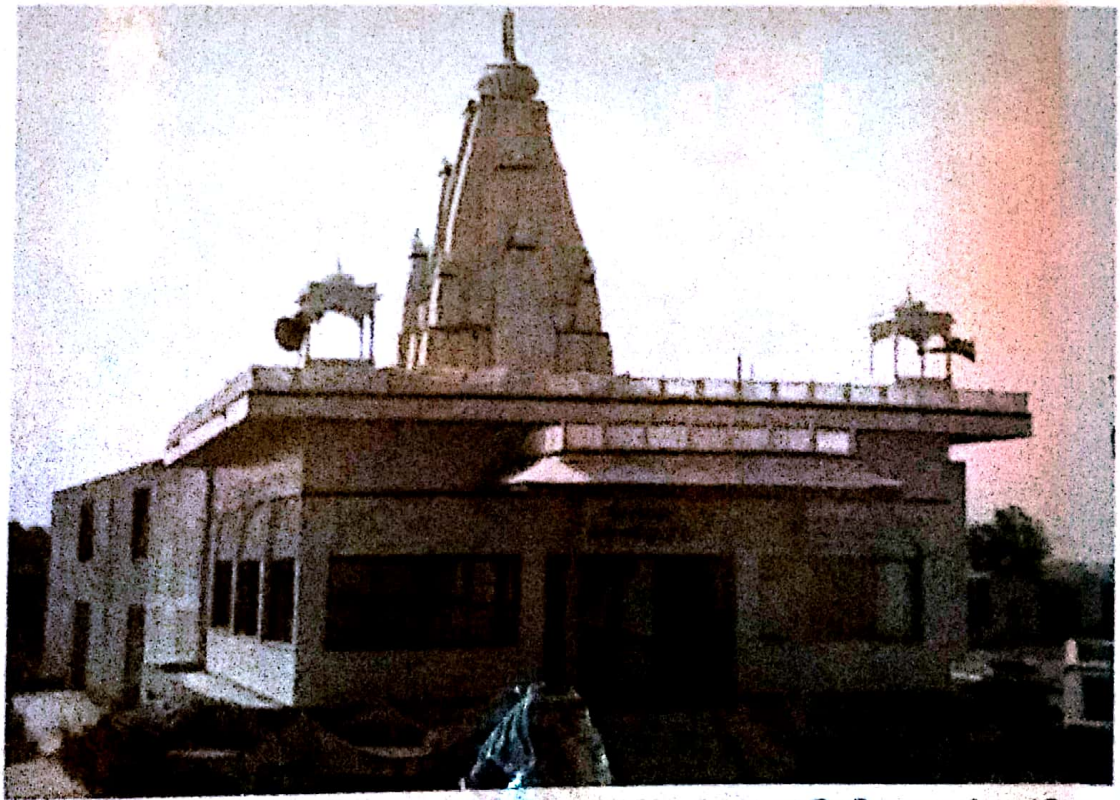

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राजस्थान) में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर

Scanned by CamScanner